वर्ष-1 , अंक-6 | बेंगलुरु, सोमवार , 24 अगस्त 2026 | RNI NO:KNHIN/26/A5540 | Contact:news@bhaarataarth.com | पृष्ठ – 4 ,मूल्य – 5 रुपए

दैनिक समाचार पत्र

भारतार्थ खबर

ख़बर नहीं, उसका अर्थ

देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया

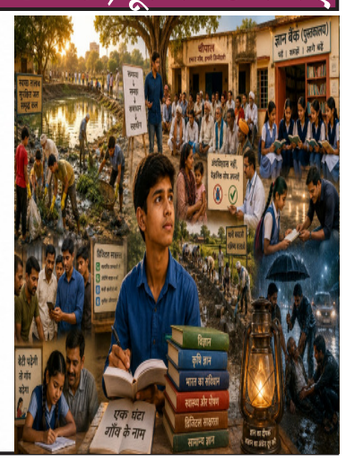

2029 में एक देश, एक चुनाव की तैयारी तेज?

भारतार्थ खबर

Bhaarataarth.com

नई दिल्ली। देश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने की प्रस्तावित व्यवस्था यानी ह्यएक देश, एक चुनावह्न को लेकर राजनीतिक और संवैधानिक स्तर पर कवायद तेज होने की चर्चा है। सामने आई जानकारी के अनुसार, इस व्यवस्था को लागू करने के लिए गठित संसद की संयुक्त समिति विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों से विचार-विमर्श की प्रक्रिया आगे बढ़ा रही है।

इस बीच सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या ह्यएक देश, एक चुनावह्न को वर्ष 2034 के बजाय 2029 में ही लागू करने का लक्ष्य रखा जा रहा है? यदि ऐसा होता है तो आगामी लोकसभा चुनावों के साथ कई राज्यों में विधानसभा चुनावों को भी एक साथ कराने की दिशा में बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है। हालांकि, 2029 की समय-सीमा को लेकर अंतिम निर्णय और संवैधानिक प्रक्रिया पूरी होना अभी बाकी है।

सभी विधानसभाओं के कार्यकाल को लेकर चुनौती

एक साथ चुनाव कराने की व्यवस्था लागू करने के लिए अलग-अलग राज्यों की विधानसभाओं के कार्यकाल को एक निश्चित चुनावी चक्र के साथ समायोजित करना होगा। मौजूदा व्यवस्था में राज्यों के विधानसभा चुनाव अलग-अलग समय पर होते हैं, जबकि कुछ राज्यों में लोकसभा चुनाव के साथ विधानसभा चुनाव भी होते हैं।

आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा और सिक्किम में वर्ष 2024 में लोकसभा चुनाव के साथ विधानसभा चुनाव भी हुए थे। ऐसे में सभी राज्यों को एक साझा चुनावी चक्र में लाना संवैधानिक और प्रशासनिक दृष्टि से बड़ी चुनौती होगी।

संयुक्त समिति कर रही कानूनी पहलुओं की समीक्षा

ह्यएक देश, एक चुनावह्न से जुड़े प्रस्ताव पर संसद की संयुक्त समिति संवैधानिक, कानूनी और प्रशासनिक पहलुओं का अध्ययन कर रही है। समिति संविधान (129वां संशोधन) विधेयक, 2024 सहित इससे जुड़े प्रावधानों की समीक्षा कर रही है। प्रस्तावित व्यवस्था के तहत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनावों को एक साझा चुनावी चक्र में लाने की परिकल्पना की गई है। इसके लिए संविधान में कई महत्वपूर्ण बदलाव आवश्यक होंगे।

मुख्यमंत्रियों से मांगे जा रहे सुझाव

इस मुद्दे पर राज्यों के मुख्यमंत्रियों और विभिन्न राजनीतिक दलों से विचार-विमर्श महत्वपूर्ण माना जा रहा है। कुछ भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने के विचार का समर्थन किया है।

हालांकि, इस व्यवस्था को लागू करने के लिए केवल राजनीतिक सहमति ही पर्याप्त नहीं होगी। संविधान संशोधन, राज्यों की सहमति, विधानसभाओं के कार्यकाल में संभावित बदलाव और चुनावी व्यवस्था से जुड़े अनेक कानूनी प्रश्नों का समाधान भी आवश्यक होगा। शीतकालीन सत्र में रिपोर्ट पर नजर

संसदीय समिति की रिपोर्ट संसद के आगामी शीतकालीन सत्र में पेश किए जाने की संभावना को लेकर चर्चा है। रिपोर्ट आने के बाद ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि समिति ने ह्यएक देश, एक चुनावह्न को लागू करने के लिए किस समय-सीमा और किस संवैधानिक व्यवस्था की सिफारिश की है।

फिलहाल 2029 में एक साथ चुनाव कराने की चर्चा को अंतिम निर्णय नहीं माना जा सकता। सरकार और संसद की ओर से औपचारिक निर्णय तथा आवश्यक संवैधानिक प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही इसकी वास्तविक तस्वीर स्पष्ट होगी।

भारत में टैलेंट की कमी नहीं, जोखिम उठाइए: पीएम मोदी

भारतार्थ खबर

Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 23 अगस्त 2026। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी भागीदारी और नवाचार को बढ़ावा देने पर जोर देते हुए शुक्रवार को सेवा तीर्थ में 20 प्रमुख स्पेस स्टार्टअप्स के सीईओ और संस्थापकों से संवाद किया। उन्होंने युवा उद्यमियों की जोखिम उठाने की क्षमता और सरकार पर उनके भरोसे की सराहना करते हुए कहा कि भारत में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है और देश अंतरिक्ष क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की दिशा में तेजी से आगे बढ़ सकता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि निजी उद्यमियों ने ऐसे क्षेत्र में कदम रखा है, जहां नई तकनीक और बड़े निवेश के साथ जोखिम भी जुड़ा है। उन्होंने कहा कि सरकार की नीतियों में निरंतरता और स्थिरता जरूरी है, ताकि जोखिम उठाने वाले उद्यमियों को यह भरोसा रहे कि किसी कठिन परिस्थिति में उन्हें बीच रास्ते में अकेला नहीं छोड़ा जाएगा।

प्रतिभा को भारत की ओर आकर्षित करने पर जोर

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत में उच्च गुणवत्ता वाली प्रतिभा उपलब्ध है और देश की लागत प्रतिस्पर्धात्मकता भी एक बड़ी ताकत है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ऐसा अनुकूल माहौल तैयार किया जाना चाहिए, जिससे दुनिया

के प्रतिभाशाली लोग अंतरिक्ष क्षेत्र में करियर और अनुसंधान के लिए भारत को प्राथमिकता दें।

उन्होंने कहा कि भारत अपने विशाल प्रतिभा पूल को अंतरिक्ष क्षेत्र की ताकत में बदल सकता है। प्रधानमंत्री के मुताबिक भारतीय युवाओं में नई चुनौतियों को स्वीकार करने और जोखिम उठाने की स्वाभाविक क्षमता है, जिसका लाभ देश के अंतरिक्ष उद्योग को मिल सकता है।

अंतरिक्ष तकनीक का आम लोगों के जीवन में इस्तेमाल

संवाद के दौरान प्रधानमंत्री ने अंतरिक्ष तकनीक के इस्तेमाल को केवल रॉकेट और उपग्रहों तक सीमित न रखने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कृषि, डेयरी और पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के नए अनुप्रयोग विकसित करने पर जोर दिया। प्रधानमंत्री ने अंतरिक्ष कंपनियों से ऐसी तकनीकों और सेवाओं पर काम करने का आान किया, जो आम नागरिकों का जीवन आसान बनाने के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था और विकास को भी गति दें।

प्रमुख स्पेस स्टार्टअप्स के प्रतिनिधि रहे मौजूद

बैठक में स्काईरूट एयरोस्पेस, अग्निकुल कॉसमॉस और पिक्सेल सहित भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र में काम कर रहे प्रमुख स्टार्टअप्स के प्रतिनिधि शामिल हुए। प्रधानमंत्री ने इन उद्यमियों की ऊर्जा, महत्वाकांक्षा और भविष्य की योजनाओं में रुचि दिखाई। प्रधानमंत्री ने भारतीय अंतरिक्ष यात्रा के भविष्य को लेकर युवाओं और उद्यमियों की सोच जानने पर भी जोर दिया। यह संवाद भारत के तेजी से विकसित हो रहे निजी अंतरिक्ष उद्योग और सरकार के बीच सहयोग को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

आरक्षण पर दिल्ली में संग्राम, नेताओं के बयानों से गरमाई सियासत

भारतार्थ खबर

Bhaarataarth.com

नई दिल्ली। आरक्षण व्यवस्था और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (वऋह्न) के कुछ नियमों को लेकर शुक्रवार को दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन हुआ। विभिन्न राज्यों से पहुंचे युवाओं और सामाजिक संगठनों से जुड़े लोगों ने मौजूदा आरक्षण व्यवस्था में बदलाव तथा कुछ नीतियों की समीक्षा की मांग उठाई। प्रदर्शन के दौरान बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे और अपनी मांगों को लेकर नारेबाजी की।

प्रदर्शनकारियों ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को अधिक प्राथमिकता देने, आरक्षण व्यवस्था में सुधार और वऋह्न के कथित नए प्रावधानों की समीक्षा की मांग रखी। उनका कहना था कि सरकारी नौकरियों और उच्च शिक्षण संस्थानों में अवसरों की व्यवस्था को अधिक पारदर्शी और जरूरतमंद लोगों के अनुकूल बनाया जाना चाहिए।

सुरक्षा के कड़े इंतजाम

प्रदर्शन को देखते हुए दिल्ली पुलिस ने जंतर-मंतर और आसपास के इलाके में सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए। बैरिकेडिंग के साथ अतिरिक्त पुलिस बल और सुरक्षा कर्मियों की तैनाती की गई। भीड़ को निर्धारित क्षेत्र में रखने के लिए पुलिस ने लगातार निगरानी की।

प्रदर्शन के दौरान कुछ लोगों को हिरासत में लिए जाने की भी जानकारी सामने आई। हालांकि, पुलिस कार्रवाई और हिरासत में लिए गए लोगों की संख्या को लेकर आधिकारिक विस्तृत जानकारी अलग-अलग दावों के रूप में सामने आई है।

सोशल मीडिया से आंदोलन को मिला विस्तार आयोजकों के अनुसार, प्रदर्शन के लिए देश के विभिन्न हिस्सों से युवाओं को सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यमों के जरिए जोड़ा गया। उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा और कर्नाटक सहित कई राज्यों से लोग दिल्ली पहुंचे। प्रदर्शनकारियों की प्रमुख मांगों में आर्थिक आधार को अधिक महत्व देना, रउ, रळ और ड्डउ से संबंधित नीतियों की समीक्षा, क्रीमी लेयर से जुड़े प्रावधानों पर पुनर्विचार तथा वऋह्न के कुछ दिशा-निर्देशों में बदलाव शामिल बताए गए। अखिलेश यादव ने जताई आपत्ति आरक्षण को लेकर राजनीतिक प्रतिक्रियाएं भी तेज हो गई हैं। समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव ने आरक्षण व्यवस्था में बदलाव की मांगों पर आपत्ति जताते हुए कहा कि आरक्षण वंचित और पिछड़े वर्गों का संवैधानिक अधिकार है। उन्होंने आरक्षण की समीक्षा के नाम पर अधिकारों को कमजोर किए जाने के प्रयास का विरोध किया।

वहीं, आरक्षण व्यवस्था के आलोचकों की ओर से योग्यता और आर्थिक स्थिति को अधिक महत्व देने की मांग उठाई गई। स्वामी आनंद स्वरूप ने भी आंदोलन के समर्थन में आरक्षण नीति और संबंधित कानूनों में व्यापक बदलाव की मांग रखी।

चिराग पासवान ने संवाद को बताया रास्ता

केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि लोकतांत्रिक तरीके से उठाई गई मांगों पर सरकार संवाद के लिए तैयार है। वहीं केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले ने आरक्षण व्यवस्था का बचाव करते हुए इसके संवैधानिक आधार पर जोर दिया और आंदोलन की मांगों से असहमति जताई। उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री संजय निषाद ने भी सामाजिक अधिकारों और पुरानी प्रतिबद्धताओं को बनाए रखने की बात कही। इस बीच प्रदर्शनकारी प्रतिनिधियों और उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री के बीच बातचीत होने की जानकारी सामने आई है। प्रदर्शनकारियों को केंद्र सरकार के संबंधित प्रतिनिधियों के साथ संवाद कराने का आश्वासन दिए जाने की बात कही गई है।

आरक्षण पर बहस फिर केंद्र में दिल्ली का यह प्रदर्शन आरक्षण को लेकर लंबे समय से चल रही राजनीतिक और सामाजिक बहस को एक बार फिर राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में ले आया है। एक ओर प्रदर्शनकारी आर्थिक आधार और कथित नीतिगत असमानताओं में बदलाव की मांग कर रहे हैं, वहीं आरक्षण समर्थक इसे संविधान प्रदत्त सामाजिक न्याय की व्यवस्था मानते हैं। ऐसे में आगे की दिशा सरकार और संबंधित संस्थाओं की ओर से होने वाले संवाद, नीतिगत फैसलों तथा संवैधानिक प्रावधानों पर निर्भर करेगी। फिलहाल आरक्षण के मुद्दे पर राजनीतिक दलों के बीच बयानबाजी और सामाजिक संगठनों की सक्रियता बढ़ती दिखाई दे रही है।

मंत्रियों को मिला सीलबंद सोशल मीडिया रिपोर्ट कार्ड

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने अपने मंत्रियों की सोशल मीडिया सक्रियता और डिजिटल पहुंच का आकलन शुरू कर दिया है। सूत्रों के अनुसार, 19 अगस्त को हुई केंद्रीय कैबिनेट बैठक के बाद मंत्रियों को सीलबंद लिफाफों में उनकी सोशल मीडिया गतिविधियों का विस्तृत रिपोर्ट कार्ड सौंपा गया। रिपोर्ट में 1 मई से 15 अगस्त तक की डिजिटल गतिविधियों का विश्लेषण शामिल बताया गया है।

चार प्रमुख प्लेटफॉर्म पर हुआ आकलन

जानकारी के मुताबिक, मंत्रियों की गतिविधियों का आकलन एक्स, इंस्टाग्राम, फेसबुक और लिंक्डइन जैसे प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर किया गया। रिपोर्ट में पोस्ट की संख्या, लोगों की प्रतिक्रिया, लाइक्स और डिजिटल एंगेजमेंट सहित कई मानकों को शामिल किया गया।

बताया गया है कि मंत्रियों की डिजिटल पहुंच और जनता के साथ ऑनलाइन जुड़ाव की तुलना भी की गई। कुछ मामलों में विपक्षी नेताओं और अन्य राजनीतिक हस्तियों की सोशल मीडिया गतिविधियों से मिलने वाली प्रतिक्रिया को भी तुलना का आधार बनाया गया।

रोजाना की डिजिटल गतिविधियों पर नजर

रिपोर्ट में कथित तौर पर यह भी देखा गया कि मंत्री औसतन प्रतिदिन कितने पोस्ट करते हैं और प्रत्येक पोस्ट पर कितना एंगेजमेंट मिलता है। इसके अलावा फॉलोअर्स की भौगोलिक स्थिति और पोस्ट पर मिलने वाली सार्वजनिक प्रतिक्रिया का भी विश्लेषण किए जाने की बात सामने आई है। मंत्रियों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अधिक सक्रिय रहने और सरकार की योजनाओं तथा नीतियों की जानकारी सीधे जनता तक पहुंचाने की सलाह दिए जाने की जानकारी है।

तीन वरिष्ठ मंत्री कैबिनेट बैठक में नहीं थे

19 अगस्त की कैबिनेट बैठक में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, विदेश मंत्री एस. जयशंकर और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल मौजूद नहीं थे। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, तीनों मंत्री केंद्रीय राज्य मंत्री जितिन प्रसाद के साथ भारत-सिंगापुर आर्थिक संबंधों से जुड़ी उच्चस्तरीय बातचीत के लिए सिंगापुर गए हुए थे। Ge»»f से सीधा संवाद बढ़ाने की रणनीति

मंत्रियों के सोशल मीडिया प्रदर्शन की समीक्षा को केंद्र सरकार की डिजिटल संचार रणनीति से जोड़कर देखा जा रहा है। खासकर युवा वर्ग और ञ्रील्ले तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी सीधे पहुंचाने पर जोर बढ़ा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी पार्टी नेताओं, केंद्रीय मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों से सोशल मीडिया के माध्यम से जनता के साथ सीधे संवाद करने और सरकारी योजनाओं की जानकारी साझा करने पर जोर देते रहे हैं। NEET विवाद के बाद युवाओं पर बढ़ा फोकस ठएएळ से जुड़े विवादों और अन्य मुद्दों पर युवाओं के विरोध के बीच राजनीतिक दलों के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का महत्व और बढ़ गया है। सोशल मीडिया अब युवाओं तक राजनीतिक संदेश पहुंचाने का प्रमुख माध्यम बन चुका है। हालांकि, मंत्रियों को दिए गए कथित रिपोर्ट कार्ड की पूरी सामग्री सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है। इसलिए रिपोर्ट में शामिल प्रत्येक आंकड़े की स्वतंत्र पुष्टि संभव नहीं है। इस पूरी कवायद का वास्तविक प्रभाव आने वाले समय में सरकार और उसके मंत्रियों की डिजिटल सक्रियता में दिखाई दे सकता है।

आंखों में मिर्च झोंक पुलिसकर्मियों पर हमला, तीन घायल

भारतार्थ खबर

Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 23 अगस्त 2026। बाहरी दिल्ली के भलस्वा डेयरी थाना क्षेत्र के मुकुंदपुर इलाके में ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों पर कथित तौर पर हमला किए जाने का मामला सामने आया है। पुलिस के अनुसार, आरोपियों ने पुलिसकर्मियों की आंखों में लाल मिर्च पाउडर झोंकने के बाद ईंट और लाठी-डंडों से हमला किया। घटना में तीन पुलिसकर्मी घायल हुए हैं।

संदिग्ध बाइक जब्त करने के बाद हुआ विवाद

पुलिस के मुताबिक, 22 अगस्त को दोपहर करीब तीन बजे बीट स्टाफ के हेड कॉन्स्टेबल दिनेश और हेड कॉन्स्टेबल राजेश मुकुंदपुर इलाके में गश्त कर रहे थे। इस दौरान उन्हें एक मोटरसाइकिल मिली, जिसके वैध दस्तावेज उपलब्ध नहीं थे।

पुलिस ने कानूनी प्रक्रिया के तहत दिल्ली पुलिस अधिनियम की धारा 66 के अंतर्गत मोटरसाइकिल को जब्त कर थाने में जमा करा दिया।

करीब आधे घंटे बाद दोनों पुलिसकर्मी जनता विहार इलाके में अपनी बीट पर लौटे। पुलिस के अनुसार, वहां मोटरसाइकिल मालिक अपने कुछ परिजनों के साथ मौजूद था। आरोप है कि बाइक जब्त किए जाने से नाराज लोगों ने दोनों पुलिसकर्मियों पर हमला कर दिया।

मिर्च पाउडर डालने के बाद ईंट-डंडों से वार

पुलिस के अनुसार, हमलावरों ने पहले पुलिसकर्मियों की आंखों में मिर्च पाउडर डाला और इसके बाद ईंट तथा लाठी-डंडों से मारपीट शुरू कर दी। साथी पुलिसकर्मियों को बचाने पहुंचे हेड कॉन्स्टेबल टीनू पर भी कथित तौर पर हमला किया गया।

घटना में तीन पुलिसकर्मी घायल हुए हैं। इनमें हेड कॉन्स्टेबल दिनेश के सिर पर गंभीर चोट लगने की जानकारी सामने आई है।

17 वर्षीय किशोर पकड़ा, मुख्य आरोपी फरार

मामले में पुलिस ने घटनास्थल से एक 17 वर्षीय किशोर को पकड़ा है। वहीं पुलिस के अनुसार मुख्य आरोपी सुनील उर्फ पंकज और उसके अन्य साथी मौके से फरार हो गए।

पुलिस ने मामले में एफआईआर संख्या 537/26 दर्ज की है। पुलिस के मुताबिक, फरार आरोपी सुनील क्षेत्र का घोषित बदमाश (बीसी) है और उसके खिलाफ एनडीपीएस समेत अन्य गंभीर अपराधों से जुड़े पांच मामले पहले से दर्ज हैं।

फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की कई टीमें संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही हैं। पुलिस पूरे घटनाक्रम की जांच कर रही है और हमले में शामिल अन्य लोगों की भूमिका भी खंगाली जा रही है।

यमुना फ्लडप्लेन केस में आर्ट ऑफ लिविंग को बड़ी राहत

भारतार्थ खबर

Bhaarataarth.com

नई दिल्ली। यमुना के बाढ़ क्षेत्र से जुड़े करीब नौ साल पुराने मामले में सुप्रीम कोर्ट ने आर्ट ऑफ लिविंग से जुड़ी संस्था व्यक्ति विकास केंद्र इंडिया को बड़ी राहत दी है। शीर्ष अदालत ने राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) के वर्ष 2017 के उस आदेश को रद्द कर दिया, जिसमें 2016 के विश्व संस्कृति महोत्सव के दौरान यमुना फ्लडप्लेन को हुए कथित नुकसान के लिए संस्था को जिम्मेदार ठहराया गया था। साथ ही दिल्ली विकास प्राधिकरण (DDA) को संस्था द्वारा जमा किए गए 5 करोड़ रुपये के पर्यावरणीय मुआवजे को चार सप्ताह के भीतर लौटाने का निर्देश दिया गया है। नुकसान के लिए सीधा संबंध साबित नहीं हुआ जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा और जस्टिस एन.के. सिंह की पीठ ने अपील स्वीकार करते हुए कहा कि रिकॉर्ड में ऐसा पर्याप्त प्रत्यक्ष साक्ष्य नहीं है, जिससे 2016 में आयोजित विश्व संस्कृति महोत्सव और यमुना के बाढ़ क्षेत्र को हुए कथित नुकसान के बीच सीधा संबंध स्थापित हो सके। अदालत के अनुसार, कार्यक्रम स्थल संस्था को सौंपे जाने से पहले ही खराब स्थिति में था। NGT के 2017 के आदेश पर रोक विश्व संस्कृति महोत्सव 11 से 13 मार्च 2017 में आर्ट ऑफ लिविंग से जुड़ी संस्था को बाढ़ क्षेत्र की बहाली और

2016 के बीच दिल्ली में यमुना के सक्रिय बाढ़ क्षेत्र में आयोजित किया गया था। आयोजन के बाद पर्यावरणीय क्षति को लेकर विवाद खड़ा हुआ और मामला वऋह्न तक पहुंचा। NGT ने विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट के आधार पर वर्ष पुनर्स्थापन से संबंधित जिम्मेदारी तय करते हुए 5 करोड़ रुपये की जमा राशि का इस्तेमाल करने का निर्देश दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने अब उस अंतिम आदेश को रद्द कर दिया है। विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट पर भी उठे सवाल शीर्ष अदालत ने माना कि NGT विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट से काफी प्रभावित हुआ था। सुप्रीम कोर्ट के अनुसार, रिकॉर्ड में कार्यक्रम से पहले स्थल की स्थिति को लेकर ऐसी सामग्री मौजूद थी, जो यह संकेत देती थी कि क्षेत्र पहले से ही खराब अवस्था में था।

अदालत ने यह भी माना कि कार्यक्रम से पहले और बाद की परिस्थितियों को देखते हुए संस्था पर कथित पर्यावरणीय क्षति की सीधी जिम्मेदारी तय करने का पर्याप्त आधार नहीं था।

DDA को लौटाने होंगे 5 करोड़ रुपये

सुप्रीम कोर्ट ने DDA को निर्देश दिया है कि व्यक्ति विकास केंद्र इंडिया द्वारा जमा किए गए 5 करोड़ रुपये चार सप्ताह के भीतर वापस किए जाएं। अदालत ने साथ ही स्पष्ट किया कि यमुना के बाढ़ क्षेत्र के व्यापक पुनर्वास और संरक्षण की जिम्मेदारी उऊभ की बनी रहेगी।

सक्रिय बाढ़ क्षेत्र में आयोजन पर सवाल बरकरार

सुप्रीम कोर्ट के फैसले से आर्ट ऑफ लिविंग से जुड़ी संस्था को मामले में बड़ी कानूनी राहत मिली है, लेकिन यमुना के सक्रिय बाढ़ क्षेत्र में इतने बड़े आयोजन की अनुमति दिए जाने का पर्यावरणीय प्रश्न अपनी जगह महत्वपूर्ण बना हुआ है।

अदालत ने उऊभ को बाढ़ क्षेत्र के पुनर्वास का काम जारी रखने का निर्देश दिया है। इस तरह फैसले का मुख्य प्रभाव संस्था पर लगाए गए दायित्व और 5 करोड़ रुपये की राशि की वापसी से जुड़ा है, जबकि यमुना फ्लडप्लेन के संरक्षण की जिम्मेदारी संबंधित प्राधिकरणों पर बनी हुई है।

संपादकीय

अभी जीतने को आसमां और भी हैं

भारत जब स्वतंत्र हुआ था, तब देश की सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी स्थिति इतनी कमजोर थी कि अंतरिक्ष अनुसंधान जैसी अवधारणा केवल एक स्वप्न लगती थी। उस समय बुनियादी ढांचे का अभाव, सीमित संसाधन और गरीबी जैसी परिस्थितियां थीं, जहां भोजन, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे मूलभूत सवाल ही सबसे बड़े थे लेकिन इतिहास गवाह है कि भारत ने विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए वैज्ञानिक क्षमता, दूरदर्शी नेतृत्व और अदम्य इच्छाशक्ति के बल पर अंतरिक्ष अनुसंधान के ऐसे झंडे गाड़े, जिन्होंने पूरी दुनिया को चकित कर दिया। भारत की अंतरिक्ष यात्रा का सफर 1960 के दशक में बहुत ही साधारण प्रयोगों से शुरू हुआ था। एक समय ऐसा था, जब उपग्रहों और उपकरणों को बैलगाडियों और साइकिलों पर ढोया जाता था लेकिन भारतीय वैज्ञानिकों ने कभी हार नहीं मानी। धीरे-धीरे उस छोटे से बीज ने वृक्ष का रूप लिया और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो का नाम दुनिया के सबसे सशक्त अंतरिक्ष संगठनों में शुमार हो गया। 23 अगस्त, 2023 को भारत ने अपने चंद्रयान-3 मिशन की सफलता के साथ वह ऐतिहासिक कारनामा कर दिखाया, जिसने अंतरिक्ष की दुनिया में स्वर्णाक्षरों से भारत का नाम अंकित कर दिया। उस दिन भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला पहला और चंद्रमा की सतह पर उतरने वाला चौथा देश बना। इसी ऐतिहासिक उपलब्धि को याद करते हुए भारत अब हर साल 23 अगस्त को नैशनल स्पेस डे यानी राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में मनाता है। इस बार इस दिवस की थीम है विकसित भारत की ओर रू नवाचार, सहयोग और वैश्विक अंतरिक्ष नेतृत्व की आकांक्षा, जो भारत की अंतरिक्ष यात्रा को केवल उपलब्धियों के उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, वैज्ञानिक नवाचार, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और वैश्विक नेतृत्व की व्यापक आकांक्षा के रूप में प्रस्तुत करती है। भारत का पहला कदम अंतरिक्ष में 1975 में उपग्रह आर्यभट्ट के प्रक्षेपण से हुआ था। यह भारत के लिए न केवल वैज्ञानिक महत्व का क्षण था बल्कि इसने एक नवयुग की नींव रखी। उसके बाद इसरो ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। भारत ने न केवल अपने उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए, बल्कि कई देशों के उपग्रहों को भी प्रक्षेपित करके स्पेस डिप्लोमेसी का नया अध्याय रचा। भारत का पहला चंद्र मिशन चंद्रयान-1 2008 में लांच किया गया। उस मिशन ने साबित कर दिया कि भारतीय वैज्ञानिक किसी भी बड़ी चुनौती को स्वीकार कर सकते हैं। चंद्रयान-1 ने चंद्रमा की सतह पर पानी के अणुओं के अस्तित्व की पुष्टि की, जो अब तक की सबसे बड़ी वैज्ञानिक खोजों में से एक है। इसरो की यही वैज्ञानिक जिज्ञासा और दूरदृष्टता भारत को मंगल तक भी ले गई। 2013 में जब इसरो ने अपने सीमित संसाधनों के बावजूद मात्र 450 करोड़ रुपए की लागत से मंगलयान मिशन को लांच किया और 2014 में मंगल की कक्षा में प्रवेश कराया तो पूरी दुनिया ने अवाक होकर भारत की क्षमता को स्वीकार किया। भारत पहला ऐसा देश बन गया, जिसने अपने पहले ही प्रयास में मंगल तक पहुंचने का कीर्तिमान स्थापित किया। मंगलयान दुनिया का सबसे किफायती मंगल मिशन साबित हुआ। भारत ने उसके बाद चंद्रयान-2 मिशन से एक और ऐतिहासिक प्रयास किया। हालांकि लैंडर विक्रम चंद्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक उतर नहीं पाया और अंतिम क्षणों में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, फिर भी ऑर्बिटर अब भी सक्रिय है और चंद्रमा के बारे में नई-नई जानकारियां भेज रहा है। चंद्रयान-3 ने वही अधूरा सपना पूरा किया। 14 जुलाई, 2023 को प्रक्षेपित चंद्रयान-3 मिशन 23 अगस्त को इतिहास रचते हुए दक्षिणी ध्रुव पर उतरा। यह वह क्षेत्र है, जिसे कोई देश छू नहीं पाया था। चंद्रयान-3 के रोवर प्रज्ञान और लैंडर विक्रम ने चंद्रमा की सतह से कई महत्वपूर्ण डाटा जुटाए, जिनसे भविष्य में चंद्रमा पर मानव बस्ती बसाने जैसी योजनाओं को बल मिलेगा। आज जब भारत गगनयान मिशन की तैयारी कर रहा है, जिसमें भारतीय अंतरिक्ष यात्री पहली बार स्वदेशी तकनीक से अंतरिक्ष की यात्रा करेंगे, तो यह यात्रा एक नई छलांग होगी। भविष्य की ओर देखें तो इसरो अब चंद्रयान-4 और चंद्रयान-5 जैसे नए मिशनों पर भी कार्य कर रहा है, साथ ही सूर्य के अध्ययन के लिए आदित्य-एल1 के बाद शुक्र ग्रह पर संभावित अभियान और अंतरिक्ष स्टेशन की परिकल्पना जैसे प्रोजैक्ट भारत को अंतरिक्ष विज्ञान की अगली पंक्ति में ले जाएंगे। बहरहाल, राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस हमें याद दिलाता है कि चुनौतियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि राष्ट्र के वैज्ञानिक, तकनीकी विशेषज्ञ और युवा मिलकर सपने देखें और उन्हें पूरा करने की ठान लें, तो असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। आने वाला कल निश्चित रूप से भारत के लिए और भी गौरवपूर्ण होगा और अंतरिक्ष विज्ञान की इस यात्रा में भारत नई ऊंचाइयां छूते हुए मानव सभ्यता के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगा।

आखिरी दीपक

अशोक कुमार सिंह (उत्तर प्रदेश)

माधोपुर नाम का एक छोटा-सा गाँव था। गाँव बहुत बड़ा नहीं था, लेकिन उसकी अपनी एक दुनिया थी। चारों ओर खेत, बीच से गुजरती कच्ची सड़क, पुराने पीपल के नीचे बनी चौपाल, एक छोटा-सा सरकारी विद्यालय, पंचायत भवन और गाँव के किनारे बहने वाली बरसाती नदी-यही माधोपुर की पहचान थी। गाँव में सुबह सूरज के साथ होती थी और रात जल्दी उतर आती थी। बिजली थी, लेकिन अक्सर चली जाती थी। मोबाइल लगभग हर हाथ में था, लेकिन किताबें बहुत कम हाथों में दिखाई देती थीं। गाँव के बुजुर्ग कहते थे कि माधोपुर पहले बहुत जागरूक गाँव हुआ करता था। लोग एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ खड़े होते थे। बच्चे पढ़ने के लिए दूर शहर तक जाते थे। किसान मौसम, मिट्टी और पानी की जानकारी अपने अनुभव से समझते थे। महिलाएँ घर चलाने के साथ-साथ छोटे-छोटे कारोबार भी करती थीं।

लेकिन समय बदल गया था।

अब गाँव में मोबाइल तो स्मार्ट हो गए थे, लेकिन बहुत-से लोगों की सोच उलझ गई थी।

किसी को सोशल मीडिया पर मिली अफवाह सच लगती, किसी को किसी का राजनीतिक संदेश। कोई वीडियो देखकर दवा खरीद लेता, कोई इंटरनेट पर देखकर खेती का तरीका बदल देता और फसल खराब होने पर पड़ोसी को दोष देता। युवाओं में कई घंटे मोबाइल पर बीतते थे, जबकि गाँव की लाइब्रेरी में महीनों से कोई किताब नहीं खुली थी।

इसी गाँव में सत्रह वर्ष का एक लड़का रहता था–आरव।

आरव साधारण परिवार से था। उसके पिता रामनाथ किसान थे और माँ सुशीला सिलाई करती थीं। घर में ज्यादा पैसा नहीं था, लेकिन माँ-बाप ने उसे एक जिद दी थी–बेटा पढ़ना।

आरव पढ़ाई में बहुत तेज नहीं था, लेकिन उसके अंदर एक चीज बहुत मजबूत थी–सवाल पूछने की आदत।

वह हर बात पर पूछता–ऐसा क्यों? इसके पीछे कारण क्या है? अगर यह सच है तो प्रमाण क्या है? अगर कोई गरीब है तो क्या वह हमेशा गरीब रहेगा? अगर गाँव में पानी की कमी है तो बारिश का पानी बचाया क्यों नहीं जाता? अगर सरकार कोई योजना देती है तो उसका लाभ सही आदमी तक क्यों नहीं पहुँचता? कई लोग उसकी इस आदत से परेशान रहते। गाँव के एक बुजुर्ग अक्सर कहते-बहुत सवाल पूछता है यह लड़का। जिंदगी सवालों से नहीं, समझौते से चलती है।

आरव मुस्कराकर जवाब देता–

बाबा, अगर सवाल पूछना बंद कर देंगे तो गलत चीज सही कैसे होगी? बुजुर्ग चुप हो जाते।

एक दिन विद्यालय में नए शिक्षक आए। उनका नाम था विवेक सर।

विवेक सर ने पहले दिन बच्चों से कोई किताब नहीं खुलवाई। उन्होंने बोर्ड पर सिर्फ एक सवाल लिखा–ज्ञान और सूचना में क्या अंतर है? कक्षा में सन्नाटा छा गया। कुछ बच्चों ने कहा, दोनों एक ही हैं। एक ने कहा, मोबाइल में जानकारी मिलती है, वही ज्ञान है। विवेक सर मुस्कराए। उन्होंने कहा-

सूचना वह है जो आपको पता चल जाए। ज्ञान वह है जिसे समझने के बाद आप सही निर्णय ले सकें। उन्होंने आगे लिखा–

सूचना + समझ + अनुभव + विवेक = ज्ञान

फिर उन्होंने बच्चों से पूछा– अगर कोई आपको बताए कि नदी में बाढ़ आने वाली है, तो यह सूचना है। लेकिन अगर आप समझें कि नदी क्यों भरती है, पानी कहाँ से आता है, कौन-से इलाके डूब सकते हैं और बाढ़ से बचने के लिए क्या करना चाहिए-तो यह ज्ञान है। आरव ध्यान से सुन रहा था। विवेक सर ने अगला सवाल पूछा– अगर कोई व्यक्ति हर दिन सौ वीडियो देखता है, तो क्या वह ज्ञानी हो जाता है? कक्षा में कुछ बच्चे हँसने लगे। आरव ने कहा–नहीं सर। अगर वह वीडियो देखकर भी सही और गलत में फर्क न कर पाए तो वह सिर्फ बहुत सारी जानकारी वाला व्यक्ति है।

विवेक सर ने उसकी तरफ देखा और कहा– यही बात याद रखना, आरव। आने वाले समय में दुनिया की सबसे बड़ी समस्या जानकारी की कमी नहीं होगी। समस्या होगी–सही जानकारी और गलत जानकारी में अंतर करने की क्षमता।

उस दिन आरव के मन में एक नई बात बैठ गई।

पहला बदलाव

कुछ दिनों बाद गाँव में एक अफवाह फैल गई कि सरकार खेतों के लिए एक नई योजना बंद करने वाली है। कई किसानों ने तुरंत खाद और बीज खरीदने के लिए उधार लेना शुरू कर दिया।

आरव के पिता भी चिंतित थे।

सुना है योजना बंद हो जाएगी, उन्होंने कहा। आरव ने पूछा–

किसने बताया?

चौपाल पर सब कह रहे थे।

किसी ने सरकारी सूचना देखी?

रामनाथ चुप हो गए। आरव स्कूल गया और विवेक सर से पूछा।

सर ने कहा–

किसी भी महत्वपूर्ण सूचना को तीन जगह से जांचो। उन्होंने बोर्ड पर लिखा– स्रोत – प्रमाण – समय

पहला सवाल–सूचना किसने दी? दूसरा–उसका प्रमाण क्या है? तीसरा–सूचना कब की है? आरव ने सरकारी वेबसाइट और संबंधित विभाग की सूचना खोजी। पता चला कि योजना बंद नहीं हुई थी। सोशल मीडिया पर पुरानी सूचना को नए संदेश के साथ फैलाया गया था।

आरव ने घर आकर पिता को बताया। रामनाथ ने राहत की साँस ली। अगले दिन आरव ने चौपाल में भी यह बात बताई।

कुछ किसानों ने उसकी बात मानी। कुछ ने कहा–

मोबाइल में जो आता है, वह गलत थोड़े ही होता है।

आरव ने शांत होकर कहा–

गलत बात सिर्फ कागज पर नहीं लिखी जाती। मोबाइल पर भी लिखी जा सकती है। विवेक सर की बात अब सब समझ आने लगी थी। गाँव की सबसे बड़ी समस्या पानी की थी। एक दिन आरव गाँव के पुराने तालाब के पास गया। तालाब लगभग सूख चुका था। उसके आसपास प्लास्टिक, कूड़ा और मिट्टी जमा थी। वह सोचने लगा–

बारिश हर साल होती है, फिर पानी क्यों नहीं बचता?

उसी समय उसके मित्र कबीर ने कहा–तू फिर सोचने लगा?

आरव ने पूछा–कबीर, हमारे गाँव में पानी की कमी क्यों है?

कबीर ने कहा–बारिश कम होती है। आरव ने कहा–

इस साल तो खूब बारिश हुई थी। तो फिर पानी कहाँ गया?

दोनों चुप हो गए।

अगले दिन आरव ने विवेक सर से पूछा। सर ने बच्चों से गाँव के तालाब का नक्शा बनवाया। उन्होंने दिखाया कि बारिश का पानी खेतों और घरों से बहकर नदी में चला जाता था। पुराने तालाब की सफाई वर्षों से नहीं हुई थी। कई जल निकासी रास्ते बंद थे।

सर ने कहा– पानी की समस्या केवल बारिश की समस्या नहीं है। यह जल प्रबंधन की समस्या भी है।

उन्होंने बच्चों से कहा–

अगर तुम किसी समस्या को हल करना चाहते हो तो पहले समस्या को सही ढंग से समझो। गलत समस्या की पहचान से सही समाधान नहीं निकलता।

आरव ने पहली बार महसूस किया कि ज्ञान केवल परीक्षा में अच्छे अंक लाने का नाम नहीं है।

ज्ञान का मतलब था–अपने आसपास की दुनिया को समझना। एक छोटा कदम, एक बड़ा बदलाव

आरव ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर एक छोटा-सा समूह बनाया। नाम रखा गया–

एक घंटा गाँव के नाम।

नियम था कि हर रविवार गाँव के दस-पंद्रह बच्चे एक घंटे के लिए किसी सामाजिक समस्या पर काम करेंगे। पहले रविवार उन्होंने तालाब की सफाई शुरू की।

कुछ बच्चों ने कूड़ा उठाया। कुछ ने तस्वीरें लीं। कुछ ने तालाब के पुराने रास्ते खोजे। लेकिन दो घंटे भी नहीं हुए थे कि गाँव के कुछ लोग हँसने लगे। इन बच्चों से गाँव बदलेगा? पहले अपनी पढ़ाई कर लो। तालाब साफ करके क्या मिलेगा?

आरव ने किसी से बहस नहीं की।

उसने कहा– कुछ नहीं मिलेगा। लेकिन अगर तालाब बच गया तो गाँव को पानी मिलेगा।

अगले रविवार बच्चों की संख्या बढ़कर तीस हो गई। फिर कुछ किसान भी जुड़ गए। फिर महिलाओं ने कहा– हम भी श्रमदान करेंगे। धीरे-धीरे तालाब साफ होने लगा। पंचायत ने भी मशीन भेज दी। तीन महीने बाद बारिश हुई। इस बार पानी तालाब में भरने लगा। गाँव के बुजुर्ग पीपल के नीचे खड़े होकर तालाब को देखते रहे। रामनाथ ने बेटे के कंधे पर हाथ रखा। तूने हमें एक बात सिखा दी। आरव ने पूछा– क्या? समस्या बड़ी हो सकती है, लेकिन शुरुआत छोटी हो सकती है। दूसरी चुनौती– अंधविश्वास माधोपुर में एक पुरानी मान्यता थी। गाँव में जब कोई बच्चा बीमार पड़ता तो कुछ लोग उसे डॉक्टर के पास ले जाने के बजाय झाड़-फूँक कराने ले जाते। एक दिन पड़ोसी की आठ साल की बच्ची को तेज बुखार हुआ। परिवार उसे गाँव के एक तथाकथित उपचारक के पास ले गया। आरव ने कहा–

पहले डॉक्टर को दिखाइए।

परिवार ने कहा– हमारे बुजुर्गों से यही इलाज चलता आया है।

आरव चुप रहा। वह विवेक सर के पास गया। सर ने उसे समझाया–

परंपरा का सम्मान करो, लेकिन बीमारी के मामले में प्रमाण को प्राथमिकता दो। आस्था व्यक्तिगत हो सकती है, इलाज वैज्ञानिक होना चाहिए। आरव ने

गाँव में किसी की भावना को ठेस पहुँचाए बिना एक बैठक रखी।

उसने बच्चों से पूछा– अगर किसी के पैर में काँटा चुभ जाए तो क्या केवल प्रार्थना करेंगे या काँटा भी निकालेंगे? लोग मुस्कराए। अगर घर में आग लगे तो क्या भगवान से प्रार्थना करने के साथ पानी भी डालेंगे?

लोग बोले– पानी भी डालेंगे।

आरव ने कहा– तो बीमारी में भी विश्वास रखिए, लेकिन इलाज से मत भागिए।

उस दिन कई लोगों ने पहली बार यह बात गंभीरता से सुनी।

गाँव में एक छोटी-सी स्वास्थ्य जागरूकता दीवार बनाई गई, जहाँ सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं, स्वच्छता, टीकाकरण, पोषण और आपातकालीन सहायता की जानकारी लगाई जाने लगी।

आरव समझ चुका था–

ज्ञान का उद्देश्य किसी की आस्था छीनना नहीं, बल्कि अज्ञान के कारण होने वाले नुकसान को रोकना है। तीसरी चुनौती–लड़कियों की पढ़ाई माधोपुर के कई परिवार बेटियों को आठवीं या दसवीं के बाद पढ़ाना बंद कर देते थे। कारण अलग-अलग होते– घर का काम कौन करेगा?

लड़की को ज्यादा पढ़ाकर क्या करना है?

आखिर शादी ही तो करनी है।

एक दिन विद्यालय की मेधावी छात्रा नंदिनी स्कूल नहीं आई।

आरव ने पूछा तो पता चला कि उसके पिता ने उसकी पढ़ाई रोक दी थी। आरव नंदिनी के घर गया।

उसके पिता ने कहा– हम गरीब आदमी हैं। लड़की को पढ़ाने के लिए पैसे कहाँ से लाएँ? आरव ने कहा–अगर पैसे की समस्या है तो हम समाधान खोज सकते हैं। लेकिन अगर सोच की समस्या है तो पहले उसे बदलना पड़ेगा।

नंदिनी के पिता नाराज हो गए।

तू हमें समझाएगा? आरव ने विनम्रता से कहा– मैं आपको नहीं समझा रहा। मैं सिर्फ पूछ रहा हूँ–अगर आपकी बेटी पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो जाए तो क्या यह आपके परिवार के लिए नुकसान होगा?

वह चुप हो गए।

विवेक सर ने विद्यालय में छात्रवृत्ति और सरकारी योजनाओं की जानकारी जुटाई। गाँव के युवाओं ने नंदिनी के लिए किताबों की व्यवस्था की।

कुछ महीनों बाद नंदिनी ने जिला स्तर की परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन किया। उसके पिता की सोच बदलने लगी। एक दिन उन्होंने चौपाल में कहा–

बेटी को पढ़ाना खर्च नहीं, निवेश है। आरव मुस्कराया।

उस दिन गाँव में पहली बार किसी पिता ने यह बात सार्वजनिक रूप से कही थी। मोबाइल की नई भूमिका माधोपुर में मोबाइल को लेकर भी एक बड़ी समस्या थी।

युवा घंटों वीडियो देखते, लेकिन उसका उपयोग पढ़ाई या रोजगार के लिए कम करते। आरव ने सुझाव दिया– मोबाइल को बंद करने की जरूरत नहीं है। उसका उपयोग बदलने की जरूरत है।

गाँव में शाम को एक छोटा डिजिटल सत्र शुरू हुआ।

बच्चों को सिखाया गया–

- ऑनलाइन जानकारी की सत्यता कैसे जांचें।

- सरकारी वेबसाइट से योजना की जानकारी कैसे लें।

- ऑनलाइन आवेदन कैसे करें।

- डिजिटल भुगतान में सावधानी कैसे रखें।

- OTP और पासवर्ड किसी को न देने का महत्व।

- फर्जी नौकरी और फर्जी निवेश से कैसे बचें।

- किसी तस्वीर या वीडियो को साझा करने से पहले उसकी सत्यता कैसे जांचें।

एक दिन एक बुजुर्ग किसान ने पूछा– मोबाइल से खेती भी सीख सकते हैं? आरव ने कहा–

हाँ, लेकिन हर वीडियो पर भरोसा मत कीजिए। कृषि विभाग, कृषि विश्वविद्यालय और विश्वसनीय स्रोतों की जानकारी देखिए। धीरे-धीरे किसान मौसम की जानकारी देखने लगे।

कुछ ने मिट्टी की जांच कराई।

कुछ ने पानी बचाने वाली सिंचाई पद्धतियाँ अपनाईं।

गाँव में फसल का खर्च कम होने लगा। लोगों ने पहली बार समझा कि तकनीक समस्या नहीं है।

तकनीक का उपयोग करने वाला व्यक्ति तय करता है कि वह साधन बनेगी या नुकसान का कारण। चौपाल में बड़ा सवाल

एक रविवार आरव ने चौपाल में एक बैठक रखी।

उसने कहा– आज हम किसी राजनीतिक पार्टी की चर्चा नहीं करेंगे। सबने उसकी ओर देखा। आज हम सिर्फ यह सोचेंगे कि हमारा गाँव किसी सरकार के भरोसे कितना रह सकता है और अपनी जिम्मेदारी कितनी निभा सकता है। एक बुजुर्ग बोले– सरकार सड़क बनाएगी, पानी देगी, स्कूल चलाएगी। हम क्या कर सकते हैं? आरव ने कहा– बहुत कुछ। उसने बोर्ड पर लिखा– सरकार की जिम्मेदारी + नागरिक की जिम्मेदारी = मजबूत समाज सरकार कानून बना सकती है, लेकिन नागरिक उसका पालन करते हैं। सरकार स्कूल बना सकती है, लेकिन बच्चे पढ़ते हैं। सरकार अस्पताल बना सकती है, लेकिन लोग समय पर इलाज कराते हैं। सरकार सफाई की व्यवस्था कर सकती है, लेकिन कूड़ा सड़क पर कौन फेंकता है? चौपाल शांत हो गई। फिर एक किसान ने कहा– तो क्या हर समस्या के लिए सरकार को दोष देना गलत है? आरव ने कहा– नहीं। जहाँ सरकार की जिम्मेदारी है, वहाँ सवाल पूछना नागरिक का अधिकार है। लेकिन जहाँ हमारी जिम्मेदारी है, वहाँ सरकार को दोष देना आसान रास्ता है।यह बात कई लोगों के मन में उतर गई। भ्रष्टाचार के खिलाफ पहली परीक्षा कुछ महीनों बाद गाँव में एक सरकारी निर्माण कार्य शुरू हुआ। सड़क बनाने के लिए बजट आया था। कुछ लोगों ने कहा कि काम घटिया है। आरव ने कहा– आरोप लगाने से पहले दस्तावेज देखिए। उसने पंचायत से योजना की जानकारी माँगी। काम की लागत, सामग्री और स्वीकृत विवरण सामने आया। कुछ गड़बड़ियाँ वास्तव में थीं। गाँव के लोगों ने सामूहिक रूप से पंचायत से जवाब माँगा। पंचायत ने ठेकेदार से काम ठीक कराया। आरव ने कहा– भ्रष्टाचार से लड़ने का सबसे मजबूत हथियार शोर नहीं, जानकारी और पारदर्शिता है। विवेक सर ने उसकी बात आगे बढ़ाई– लोकतंत्र में नागरिक सिर्फ वोटर नहीं होता। वह निगरानी करने वाला भी होता है। एक दुर्घटना एक शाम गाँव में खबर फैली कि एक युवक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया। लोगों की भीड़ जमा हो गई। कुछ लोग वीडियो बनाने लगे। आरव ने तुरंत कहा– वीडियो मत बनाइए। पहले मदद कीजिए।उसने एंबुलेंस को सूचना दी और लोगों को भीड़ हटाने को कहा। घायल युवक को समय पर अस्पताल पहुँचाया गया। बाद में डॉक्टर ने बताया कि समय पर उपचार मिलने से उसकी जान बच गई। आरव को उस रात नींद नहीं आई। उसने सोचा– हम इंसान कब से घटना को देखने वाले बन गए और मदद करने वाले नहीं? अगले रविवार उसने बच्चों से कहा– अगर कभी सड़क दुर्घटना देखें तो पहला काम वीडियो बनाना नहीं, सुरक्षित तरीके से सहायता और आपातकालीन सेवा को सूचना देना होना चाहिए। विद्यालय में प्राथमिक सहायता और सड़क सुरक्षा पर प्रशिक्षण कराया गया। गाँव के कई युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। ज्ञान बैंक आरव का समूह अब बड़ा हो चुका था। उसने एक नई योजना शुरू की– ज्ञान बैंक।गाँव के पुराने पंचायत भवन के एक कमरे को साफ करके वहाँ किताबें रखी गईं। किसी ने प्रतियोगी परीक्षा की किताब दी। किसी ने खेती की किताब। किसी ने स्वास्थ्य संबंधी पुस्तकें। किसी ने संविधान की प्रति। किसी ने बच्चों की कहानी की किताबें। महिलाओं ने सिलाई, पोषण और छोटे व्यवसाय से संबंधित पुस्तकें जुटाईं। आरव ने एक नियम बनाया– किताब मुफ्त है, लेकिन समय की कीमत है। जो व्यक्ति किताब लेता, उसे पढ़ने के बाद अपनी समझ की एक छोटी-सी टिप्पणी लिखनी होती। कुछ लोगों ने पूछा–यह क्यों? आरव ने कहा क्योंकि पढ़ना और समझना दो अलग चीजें हैं। धीरे-धीरे गाँव में पुस्तक चर्चा शुरू हुई। पहली बैठक में सिर्फ छह लोग आए। छह महीने बाद पचास लोग आने लगे। सबसे कठिन सवाल एक दिन विवेक सर ने आरव से पूछा– तुम गाँव बदलना चाहते हो? हाँ।क्यों? आरव ने कहा– क्योंकि मुझे अपना गाँव अच्छा लगता है। सर ने कहा– गाँव बदलने से पहले खुद को बदलना पड़ेगा।

आरव चुप रहा। सर ने कहा–तुम लोगों को सत्य बताना चाहते हो, लेकिन क्या तुम अपनी गलती स्वीकार कर सकते हो? आरव ने कहा–शायद। सर बोले–शायद नहीं। यही असली परीक्षा है।कुछ दिनों बाद आरव ने एक बैठक में एक गलत जानकारी साझा कर दी। जब उसे पता चला कि वह गलत था, तो वह सबके सामने खड़ा हुआ और बोला– मैंने गलती की। मैंने बिना पर्याप्त जांच के सूचना साझा की थी। इसलिए मैं सभी से माफी माँगता हूँ।लोगों ने उसकी ईमानदारी देखी। एक बुजुर्ग बोले–आज तूने हमें सबसे बड़ी शिक्षा दी है। आरव ने पूछा–क्या ?गलत न होना बड़ी बात नहीं। गलती होने पर उसे स्वीकार करना बड़ी बात है। गाँव में बदलाव एक साल बीत गया। माधोपुर वही गाँव था, लेकिन उसकी आदतें बदलने लगी थीं। तालाब में पानी था। कूड़ा कम हुआ। विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति बढ़ी। लड़कियों की पढ़ाई को लेकर परिवारों की सोच बदली। किसानों ने मिट्टी और पानी के महत्व पर ध्यान देना शुरू किया। सरकारी योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुँचने लगी।

लोग अफवाहें तुरंत आगे भेजने से पहले सोचने लगे। चौपाल में अब सिर्फ राजनीति पर चर्चा नहीं होती थी। वहाँ खेती, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पानी, कानून और समाज पर भी चर्चा होने लगी। सबसे बड़ा परिवर्तन यह था कि लोग अब हर समस्या पर सिर्फ यह नहीं कहते थे–सरकार कुछ करे। वे पूछते–हम क्या कर सकते हैं ?एक रात का तूफान बरसात के मौसम की एक रात अचानक तेज बारिश शुरू हुई। नदी का पानी बढ़ने लगा।

पुराने समय में ऐसी बारिश के दौरान गाँव में अफरा-तफरी मच जाती थी। लेकिन इस बार गाँव तैयार था। बच्चों ने पहले से बनाए गए जल निकासी नक्शे के अनुसार सूचना दी। पंचायत ने निचले इलाकों के लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया।

युवाओं ने बुजुर्गों की सहायता की। महिलाओं ने भोजन और पानी की व्यवस्था की।

विद्यालय को अस्थायी राहत केंद्र बनाया गया। सुबह तक बारिश कम हो गई। गाँव बच गया।

विवेक सर ने आरव से कहा–

देखा? आरव ने कहा– क्या?

ज्ञान किताब में पड़ा रहता तो आज काम नहीं आता। जब ज्ञान व्यवहार में उतरता है, तभी समाज बदलता है। आरव मुस्कराया। ₹आखिरी दीपक'

कुछ वर्षों बाद विवेक सर का तबादला हो गया। जाने से पहले उन्होंने विद्यालय के मंच पर बच्चों को बुलाया। उन्होंने एक छोटा-सा मिट्टी का दीपक आरव को दिया।

आरव ने पूछा–

सर, यह क्यों? विवेक सर ने कहा– यह दीपक तुम्हें याद दिलाएगा कि अंधेरा कितना भी बड़ा हो, रोशनी को बहुत बड़ा होने की जरूरत नहीं होती।

एक छोटा दीपक भी दिशा दिखा सकता है।उन्होंने आगे कहा–

लेकिन एक दीपक का उद्देश्य खुद को रोशन करना नहीं है। उसका उद्देश्य है–दूसरे दीपक जलाना। विवेक सर चले गए।

आरव देर तक दीपक को देखता रहा। उसने तय किया कि वह अपने गाँव में जितने लोगों को संभव हो, उतने लोगों के भीतर सीखने की इच्छा जगाएगा।

उसने अपने दोस्तों से कहा–

हमारा काम लोगों को अपने पीछे चलाना नहीं है। हमारा काम है कि लोग खुद सोचने लगें।

दस वर्ष बाद समय बीत गया।

आरव पढ़ाई के लिए शहर गया।

फिर उसने सामाजिक विकास और ग्रामीण शिक्षा से जुड़े विषयों पर काम किया।

वह बड़ा अधिकारी नहीं बना।

वह किसी बड़े मंच का नेता भी नहीं बना। लेकिन उसने एक काम लगातार किया–लोगों को अपने पैरों पर खड़ा करने का काम।

दस साल बाद जब वह माधोपुर लौटा तो उसे अपना गाँव पहचानने में कुछ पल लगे।

पुराना तालाब अब बड़ा जलस्त्रोत बन चुका था। विद्यालय में पुस्तकालय था। कई लड़कियाँ उच्च शिक्षा के लिए शहर जा रही थीं। किसानों ने मिलकर जल संरक्षण समिति बनाई थी।

महिलाओं के स्वयं सहायता समूह चल रहे थे। गाँव में डिजिटल सहायता केंद्र था। चौपाल के पास एक बोर्ड लगा था– पहले जाँचें, फिर मानें; पहले समझें, फिर साझा करें। आरव ने बोर्ड पढ़ा और मुस्करा दिया। तभी एक छोटा बच्चा उसके पास आया।

उसने पूछा–भैया, क्या आप वही आरव हैं ?हाँ।आपने यह गाँव बदला ?आरव कुछ क्षण चुप रहा। फिर उसने कहा– नहीं। बच्चे ने पूछा– तो किसने बदला? आरव ने सामने खड़े लोगों की ओर इशारा किया।

इन सबने। बच्चा बोला–

लेकिन शुरूआत किसने की?

आरव ने मुस्कराकर कहा–एक सवाल ने।नया सवाल उस शाम गाँव के विद्यालय में एक कार्यक्रम था। आरव को मुख्य अतिथि बनाया गया। मंच पर बैठकर उसने बच्चों को देखा।

कई चेहरे उसे अपने पुराने दिनों की याद दिला रहे थे। उसने माइक उठाया और कहा–

मैं आज आपको सफलता का कोई आसान मंत्र देने नहीं आया हूँ। मैं सिर्फ एक सवाल देने आया हूँ। बच्चे ध्यान से सुनने लगे। आरव ने बोर्ड पर लिखा–

अगर मैं नहीं, तो कौन?

कुछ बच्चे एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे। आरव ने कहा–

जब समाज में गंदगी दिखे तो पूछिए–इसे कौन साफ करेगा?

फिर खुद से पूछिए–अगर मैं नहीं, तो कौन ?जब किसी बच्चे की पढ़ाई छूट रही हो तो पूछिए–कौन मदद करेगा ?फिर खुद से पूछिए–अगर मैं नहीं, तो कौन?

जब कोई अफवाह फैलाए तो पूछिए–सच्चाई कौन बताएगा?

फिर खुद से पूछिए– अगर मैं नहीं, तो कौन?

जब कोई बुजुर्ग अकेला हो तो पूछिए–कौन उसका साथ देगा?

फिर खुद से पूछिए– अगर मैं नहीं, तो कौन?

जब कोई लड़की अपने सपने छोड़ने को मजबूर हो तो पूछिए–कौन उसके साथ खड़ा होगा?

फिर खुद से पूछिए– अगर मैं नहीं, तो कौन?

कुछ बच्चों की आँखों में चमक आ गई।

आरव ने कहा–समाज किसी एक महान व्यक्ति से नहीं बदलता। समाज तब बदलता है जब सामान्य लोग अपनी सामान्य जिम्मेदारियाँ ईमानदारी से निभाना शुरू करते हैं।

ज्ञान की असली परीक्षा

कार्यक्रम के अंत में एक बच्चे ने सवाल पूछा– भैया, सबसे बड़ा ज्ञान क्या है ?आरव ने कुछ क्षण सोचा। फिर उसने कहा–

अपने अज्ञान को पहचानना।

बच्चा बोला–और सबसे बड़ी ताकत ?सही बात समझने के बाद उस पर अमल करना।सबसे बड़ी गलती? बिना जाने किसी बात को सच मान लेना।सबसे बड़ा साहस ?भीड़ के गलत रास्ते पर जाने के बावजूद सही रास्ते पर खड़े रहना।सबसे बड़ी सेवा ?किसी को ऐसा ज्ञान देना जिससे वह जीवन भर खुद अपना रास्ता चुन सके।और सबसे बड़ी जिम्मेदारी? आरव ने कहा–अगली पीढ़ी को हमसे बेहतर समाज देना। पूरा विद्यालय तालियों से गूंज उठा।

आखिरी दीपक जल उठा

रात हो चुकी थी।

आरव विद्यालय से बाहर निकला।

गाँव की गलियों में छोटे-छोटे दीपक जल रहे थे।

उसे विवेक सर का दिया हुआ पुराना मिट्टी का दीपक याद आया। वह अब भी उसके घर में सुरक्षित था। उसने उसे निकालकर आँगन में रखा और जलाया। तभी उसका छोटा बेटा उसके पास आया।

पापा, यह पुराना दीपक क्यों जलाते हैं? आरव ने दीपक की लौ को देखते हुए कहा–

क्योंकि यह मुझे याद दिलाता है कि रोशनी अकेले रखने की चीज नहीं है। इसे आगे बढ़ाना होता है। बेटे ने पूछा–क्या मैं भी एक दीपक जला सकता हूँ?

आरव ने उसे दूसरा दीपक दिया।

बेटे ने उसे जलाया।

फिर उसने वह दीपक अपनी बहन को दे दिया।

बहन ने तीसरा दीपक जलाया।

कुछ ही देर में आँगन में कई दीपक जलने लगे।

आरव दूर खड़ा उन्हें देखता रहा।

उसे लगा जैसे माधोपुर की असली रोशनी बिजली के खंभों से नहीं, लोगों की सोच से पैदा हुई है। उसने मन ही मन कहा–

अंधेरा कभी खत्म नहीं होता। हर पीढ़ी को अपनी रोशनी जलानी पड़ती है। और उसी रात माधोपुर के विद्यालय की दीवार पर एक नया वाक्य लिखा गया–

जिस दिन ज्ञान केवल हमारे पास रहने के बजाय हमारे व्यवहार में उतर जाता है, उसी दिन समाज बदलना शुरू हो जाता है।

सुबह जब सूरज निकला तो गाँव पहले जैसा ही दिखाई दे रहा था।

वही खेत। वही सड़क। वही घर। वही लोग। लेकिन एक फर्क था।

अब लोग सिर्फ यह नहीं पूछते थे कि–मेरे लिए समाज क्या करेगा ?वे यह भी पूछते थे–

समाज के लिए मैं क्या कर सकता हूँ?और शायद किसी भी समाज की सबसे बड़ी क्रांति यहीं से शुरू होती है। नारे से नहीं। शोर से नहीं। किसी एक व्यक्ति की महानता से भी नहीं। बल्कि उस छोटे-से सवाल से–अगर मैं नहीं, तो कौन? और उस छोटे-से उत्तर से–शुरूआत मुझसे होगी।

विद्वान नहीं, विद्यावान बनने की सीख

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

ज्ञान मनुष्य को बड़ा बनाता है, लेकिन केवल ज्ञान का संग्रह ही जीवन की सफलता का प्रमाण नहीं है। वास्तविक शिक्षा वही है जो मनुष्य के भीतर विनम्रता, विवेक, करुणा और सद्भाव पैदा करे। इसी अंतर को भारतीय रामकथा की परंपरा में रावण और हनुमान जी के चरित्र के माध्यम से समझाया गया है। तुलसीदास जी ने हनुमान जी के लिए लिखा है– विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥ यह पंक्ति केवल हनुमान जी की प्रशंसा नहीं करती, बल्कि विद्या के वास्तविक उद्देश्य की ओर संकेत करती है। ज्ञान यदि अहंकार बढ़ाए तो वह व्यक्ति को भीतर से कमजोर कर सकता है, जबकि ज्ञान के साथ विनय जुड़ जाए तो वही मनुष्य को समाज और मानवता के लिए उपयोगी बनाता है। रावण और हनुमान से समझें अंतर रामायण की कथा में रावण अत्यंत विद्वान, शक्तिशाली और अनेक शास्त्रों का ज्ञाता बताया गया है। इसके बावजूद उसका अहंकार उसके पतन का कारण बना। दूसरी ओर हनुमान जी अपार शक्ति और ज्ञान के बावजूद सदैव विनम्र दिखाई देते हैं। लंका में रावण के सामने पहुंचकर हनुमान जी निर्भीक होकर संवाद करते हैं। वे रावण को अपमानित करने के बजाय उसे समझाने का प्रयास करते हैं और कहते हैं– राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राज तुम करहू॥ अर्थात यदि रावण अपने हृदय में श्रीराम के चरणों को स्थान दे दे, तो वह अपनी लंका पर स्थिर होकर शासन कर सकता है। यह प्रसंग बताता है कि सच्चा ज्ञान केवल दूसरों की गलतियां बताने में नहीं, बल्कि उन्हें सही मार्ग दिखाने में भी है। ज्ञान के साथ विनम्रता जरूरी प्रचलित नीति-वाक्य है– विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्। अर्थात विद्या विनम्रता प्रदान करती है और विनम्रता से मनुष्य योग्यता एवं पात्रता प्राप्त करता है। यही कारण है कि भारतीय चिंतन परंपरा में ज्ञान और विनय को एक-दूसरे का पूरक माना गया है। तुलसीदास जी भी लिखते हैं– बरसहिं जलद भूमि नियराये। जथा नवहिं बुध विद्या पाये॥ जिस प्रकार जल से भरे बादल नीचे झुकते हैं, उसी प्रकार वास्तविक ज्ञानी व्यक्ति विद्या प्राप्त करने के बाद अधिक विनम्र होता जाता है। अहंकार ज्ञान को कमजोर कर देता है आज के समय में शिक्षा और सूचना के साधन तेजी से बढ़े हैं। व्यक्ति अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है, लेकिन सवाल यह है कि उस ज्ञान का उसके व्यवहार पर कितना प्रभाव पड़ रहा है? यदि शिक्षा के बाद व्यक्ति दूसरों को छोटा समझने लगे, अपनी बात को ही अंतिम सत्य माने और अहंकार को अपना स्वभाव बना ले, तो ज्ञान का उद्देश्य अधूरा रह जाता है। वहीं, जो व्यक्ति अपनी विद्या का उपयोग दूसरों के हित, समाज की भलाई और मानवता की सेवा के लिए करता है, उसके ज्ञान का वास्तविक मूल्य सामने आता है। हनुमान जी का चरित्र इसी भाव का प्रतीक है। उनके पास असाधारण शक्ति है, लेकिन उसमें अहंकार नहीं है। वे स्वयं को भगवान श्रीराम का सेवक मानते हैं और हर परिस्थिति में प्रभु के कार्य को प्राथमिकता देते हैं। आज की पीढ़ी के लिए संदेश विद्वता का मूल्य तभी है जब उसके साथ विवेक और विनम्रता हो। केवल बड़ी-बड़ी डिग्रियां, पुस्तकीय ज्ञान या तर्क करने की क्षमता किसी व्यक्ति को महान नहीं बनाती। महानता तब आती है जब ज्ञान मनुष्य के आचरण में दिखाई दे। समाज को ऐसे शिक्षित लोगों की आवश्यकता है जो अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने के बजाय उसका सदुपयोग करें। परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी समझें तथा दूसरों के सम्मान को भी उतना ही महत्व दें जितना अपने सम्मान को। विद्वान होना उपलब्धि हो सकती है, लेकिन विद्यावान बनना जीवन की साधना है। रावण और हनुमान के चरित्र से मिलने वाली यही सीख आज भी प्रासंगिक है कि ज्ञान सिर में हो, लेकिन विनम्रता हृदय में हो। मनुष्य को केवल अधिक पढ़ने और जानने का प्रयास नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने ज्ञान को चरित्र, सेवा और विनम्रता में बदलने का प्रयास करना चाहिए। सच्ची शिक्षा वही है जो व्यक्ति को स्वयं से ऊपर उठाकर समाज और मानवता के प्रति संवेदनशील बनाए। सीखः विद्वान बनने से पहले विद्यावान बनने का प्रयास करें।

धर्म के लक्षण: आचरण से बनता है सच्चा धर्म

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

धर्म केवल पूजा-पाठ, अनुष्ठान, वेशभूषा या धार्मिक पहचान का नाम नहीं है। भारतीय चिंतन परंपरा में धर्म को मनुष्य के आचरण, चरित्र, संयम, सत्य, दया और कर्तव्यबोध से जोड़ा गया है। धर्म का वास्तविक मूल्य इस बात से निर्धारित होता है कि वह हमारे व्यवहार में कितना उतरता है। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं– धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध। इन दस गुणों को जीवन में उतारने वाला व्यक्ति न केवल स्वयं को अनुशासित करता है, बल्कि परिवार और समाज में भी सकारात्मक वातावरण का निर्माण करता है। धृति और क्षमा से शुरू होती है धर्म की यात्रा धृति अर्थात धैर्य, संतोष और परिस्थितियों को सहने की क्षमता। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। कठिन समय में धैर्य बनाए रखना मनुष्य के चरित्र की परीक्षा होती है। क्षमा धर्म का दूसरा महत्वपूर्ण गुण है। शक्ति होने के बावजूद प्रतिशोध की भावना से ऊपर उठना और उचित परिस्थिति में क्षमा करना मनुष्य को महान बनाता है। क्षमा का अर्थ अन्याय को स्वीकार करना नहीं, बल्कि द्वेष और प्रतिशोध को अपने भीतर स्थायी स्थान न देना है। मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण धर्म का एक महत्वपूर्ण आधार दम और इन्द्रियनिग्रह है। मनुष्य के भीतर इच्छाओं का निरंतर प्रवाह चलता रहता है। यदि मन और इन्द्रियां विवेक के नियंत्रण में न रहें तो व्यक्ति अपनी ही इच्छाओं का दास बन सकता है। भारतीय दर्शन शरीर को रथ, बुद्धि को सारथी, मन को लगाम और इन्द्रियों को घोड़ों के रूप में समझाता है। जब बुद्धि और मन के नियंत्रण में इन्द्रियां रहती हैं, तभी जीवन सही दिशा में आगे बढ़ता है।

अस्तेय और शौच का व्यापक अर्थ

अस्तेय का सामान्य अर्थ चोरी न करना है, लेकिन इसका व्यापक अर्थ किसी दूसरे के अधिकार, श्रम, अवसर या संपत्ति का अनुचित लाभ न उठाना भी है। इसी प्रकार शौच केवल शरीर या आसपास की सफाई तक सीमित नहीं है। बाहरी स्वच्छता के साथ विचारों और भावनाओं की पवित्रता भी आवश्यक है। स्वच्छ मन ही स्वस्थ और संतुलित व्यवहार की आधारशिला बनता है।

बुद्धि, विद्या और सत्य

मनुस्मृति में धी अर्थात विवेकपूर्ण बुद्धि और विद्या को भी धर्म का अंग माना गया है। ज्ञान का उद्देश्य केवल जानकारी बढ़ाना नहीं, बल्कि सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता विकसित करना है।

सत्य धर्म का केंद्रीय तत्व है। सत्य बोलना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि सत्यनिष्ठ जीवन जीना भी उतना ही आवश्यक है। जब कथनी और करनी में अंतर समाप्त होने लगता है, तब चरित्र में वास्तविक मजबूती आती है।

अक्रोध भी धर्म का महत्वपूर्ण लक्षण है। क्रोध सबसे पहले उसी व्यक्ति को प्रभावित करता है जिसके भीतर वह उत्पन्न होता है। इसलिए संयमित प्रतिक्रिया, विवेक और संवाद की क्षमता सामाजिक जीवन में अत्यंत आवश्यक है।

याज्ञवल्क्य से भागवत तक धर्म की व्यापक परिभाषा

महर्षि याज्ञवल्क्य ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, दान, दम, दया और शांति को धर्म के साधन बताया है। यहां धर्म का दायरा व्यक्तिगत अनुशासन से आगे बढ़कर समाज के प्रति जिम्मेदारी तक पहुंचता है। श्रीमद्भागवत में धर्म के अनेक लक्षणों में सत्य, दया, तप, शौच, तितिक्षा, शम, दम, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, त्याग, स्वाध्याय, आर्जव, संतोष, सेवा और आत्मसमर्पण जैसे गुणों को महत्व दिया गया है। इससे स्पष्ट है कि भारतीय परंपरा में धर्म को जीवन के समग्र विकास से जोड़ा गया है।

विदुर नीति और तुलसी का धर्मरथ

महाभारत के विदुर ने धर्म के आठ अंगों में इज्या, अध्ययन, दान, तप, सत्य, दया, क्षमा और अलोभ को महत्व दिया। इनमें सत्य, दया, क्षमा और लोभ से मुक्ति जैसे गुण मनुष्य के आंतरिक चरित्र को मजबूत करते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस के लंकाकांड में धर्म को एक धर्मरथ के रूपक से समझाया। इस रथ के पहिए सौरज और धीरज हैं, ध्वजा सत्य और शील है, घोड़े बल, विवेक, दम और परहित हैं तथा क्षमा, कृपा और समता उसकी लगाम हैं। ईश्वर-भजन को सारथी और संतोष को तलवार बताया गया है। यह रूपक आज भी उतना ही प्रासंगिक है। जीवन की वास्तविक विजय केवल बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि चरित्र के इन गुणों से संभव होती है। धर्म का सबसे सरल सूत्र

भारतीय परंपरा में धर्म का एक अत्यंत सरल और सार्वभौमिक सिद्धांत बताया गया है– आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

अर्थात जो व्यवहार हमें स्वयं के लिए प्रतिकूल लगता है, वैसा व्यवहार हमें दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए।

यही सिद्धांत मानवता के व्यापक नैतिक आधार से जुड़ता है। यदि व्यक्ति अपने व्यवहार में इस एक विचार को भी गंभीरता से उतार ले तो अनेक सामाजिक विवादों और कटुताओं को कम किया जा सकता है। आज धर्म को कर्म में उतारने की जरूरत आज धार्मिक गतिविधियां बढ़ रही हैं, लेकिन उनके साथ धर्म के मूल गुणों का व्यवहार में आना भी उतना ही आवश्यक है। मंदिर जाना, पूजा करना और धार्मिक ग्रंथ पढ़ना निश्चित रूप से आस्था के महत्वपूर्ण माध्यम हो सकते हैं, लेकिन यदि व्यवहार में असत्य, क्रोध, अहंकार, लोभ, हिंसा और छल बना रहे तो धर्म की आत्मा अधूरी रह जाती है।

धर्म का वास्तविक प्रभाव तब दिखाई देता है जब वह हमारे व्यवहार में सत्य, मन में शांति, वाणी में मधुरता और कर्म में परहित पैदा करता है।

इसलिए धर्म को केवल बहस का विषय बनाने के बजाय उसे जीवन का अनुशासन बनाया जाना चाहिए। धैर्य रखें, क्षमा करना सीखें, इन्द्रियों पर संयम रखें, दूसरे के अधिकार का सम्मान करें, स्वच्छ विचार रखें, विवेकपूर्ण ज्ञान प्राप्त करें, सत्य का साथ दें और क्रोध पर नियंत्रण रखें। धर्म का सार किसी एक कर्मकांड या बाहरी पहचान में नहीं, बल्कि ऐसे चरित्र के निर्माण में है जिससे स्वयं को शांति मिले और दूसरों को सुरक्षा, सम्मान तथा सहयोग का अनुभव हो। यदि धर्म हमारे आचरण को बेहतर बनाता है, तभी उसकी सार्थकता है।

हैदराबाद में जन-जागरण का शंखनाद, सेमिनार में उठे राष्ट्र और संस्कृति के सवाल

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

हैदराबाद, 23 अगस्त 2026। एग्जिबिशन ग्राउंड स्थित जगद्गुरु हीरसूरि वाटिका में रविवार को आचार्य विमलसागरसूरीश्वर एवं गणिवर्य पद्मविमलसागर के सान्निध्य में पांचवें जागरण सेमिनार का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में 16 से 60 वर्ष आयु वर्ग के प्रवेश-पत्रधारी करीब 1,800 महिला-पुरुषों ने भाग लिया। राष्ट्रवादी विचारक एवं वरिष्ठ अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय कार्यक्रम के विशेष वक्ता रहे। आचार्य विमलसागरसूरि ने सामूहिक जागरण पर दिया जोर

आचार्य विमलसागरसूरीश्वर ने कहा कि समाज और देश के उज्ज्वल भविष्य तथा सांस्कृतिक विकास के लिए वैचारिक और सामाजिक जागरण आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जन-जागृति का स्वरूप अहिंसा, शालीनता, सद्भाव और सकारात्मक विचारों पर आधारित होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि ऐसी जागरूकता का प्रभाव घर-घर और जन-जन तक पहुंचना चाहिए, ताकि समाज सुरक्षित वातावरण में सुख, शांति और समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ सके।

युवाओं के आदर्शों को लेकर उठाए सवाल

आचार्य ने वर्तमान समय में फिल्मी सितारों और विभिन्न खेलों के चर्चित खिलाड़ियों को युवाओं का आदर्श बनाए जाने पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि समाज को यह भी विचार करना चाहिए कि लोकप्रियता और आर्थिक सफलता के साथ राष्ट्र निर्माण, शिक्षा, चिकित्सा, समाजसेवा, व्यसन मुक्ति, शाकाहार और मानवता के क्षेत्र में इन सार्वजनिक हस्तियों का योगदान कितना है।

उन्होंने कहा कि समाज में वास्तविक सेवा, त्याग और नैतिक मूल्यों के लिए काम करने वाले लोगों को भी उतना ही सम्मान और पहचान मिलनी चाहिए। उनके अनुसार युवाओं के सामने आदर्श व्यक्तित्वों का चयन केवल प्रसिद्धि या आर्थिक सफलता के आधार पर नहीं होना चाहिए। आचार्य ने युवाओं के भविष्य को लेकर कहा कि समाज में डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षक, इतिहासकार, किसान और शोधकर्ताओं जैसे विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देने वालों को प्रोत्साहन मिलना आवश्यक है। उन्होंने युवाओं से अपने जीवन के लक्ष्य तय करते समय सामाजिक जिम्मेदारी और राष्ट्रहित को भी ध्यान में रखने का आान किया। अश्विनी उपाध्याय ने उठाए संवैधानिक और सामाजिक मुद्दे वरिष्ठ अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय ने भ्रष्टाचार, जनसंख्या नियंत्रण, जनसांख्यिकीय बदलाव, संविधान, कानून व्यवस्था, राष्ट्रवाद, हिंदुत्व, जैनत्व और सांस्कृतिक गौरव सहित विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि व्यवस्था में बदलाव के लिए संसद, विधानसभाओं और न्यायपालिका की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्होंने सुरक्षित भारत को विकसित भारत की दिशा में आवश्यक आधार बताते हुए नागरिकों से संवैधानिक और सामाजिक विषयों को समझने का आग्रह किया।

उन्होंने युवाओं को सोशल मीडिया के उपयोग में जिम्मेदारी बरतने की सलाह दी और कहा कि नई पीढ़ी को सामाजिक हित से जुड़े मुद्दों को समझने तथा उन पर विचार करने की आवश्यकता है।

अश्विनी उपाध्याय का सम्मान

वषार्वास समिति की ओर से अश्विनी उपाध्याय का तिलक, माला, श्रीफल, शॉल और स्मृतिचिह्न देकर सम्मान किया गया। लाभार्थी परिवारों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। आयोजन के दौरान सांझी-गीत कार्यक्रम की भी जानकारी दी गई। चेन्नई की श्वेता गांधी सांझी गीतों की प्रस्तुति देंगी। आयोजकों के अनुसार इस कार्यक्रम में दो हजार से अधिक महिलाएं और कन्याएं भाग लेंगी। सेमिनार में सामाजिक जागरूकता, सांस्कृतिक मूल्यों, युवाओं की भूमिका और राष्ट्र निर्माण जैसे विषयों पर विचार-विमर्श हुआ। आयोजन का उद्देश्य समाज में सकारात्मक वैचारिक संवाद और जन-जागरण को बढ़ावा देना बताया गया।

हुबली में जाट समाज की बैठक, 21 सितंबर को तेजाजी बलिदान दिवस मनाने का निर्णय

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

हुबली-धारवाड़, 23 अगस्त 2026। जाट समाज हुबली-धारवाड़ की बैठक में आगामी 21 सितंबर को सत्यवादी वीर तेजाजी महाराज के बलिदान दिवस पर सामाजिक समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया। बैठक में समाज की एकजुटता, स्वास्थ्य, संस्कार और सामाजिक सेवा से जुड़े विषयों पर भी विचार-विमर्श हुआ। जन्मभूमि से जुड़ाव जरूरी : भंवरलाल आर्य

बैठक को संबोधित करते हुए पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के कर्नाटक राज्य प्रभारी भंवरलाल आर्य ने कहा कि जाट समाज के अनेक लोग अपनी जन्मभूमि से हजारों किलोमीटर दूर कर्नाटक में व्यापार और रोजगार के लिए आए हैं। उन्होंने कहा कि कर्मभूमि के साथ जन्मभूमि से जुड़ाव बनाए रखना भी जरूरी है।

उन्होंने समाजबंधुओं से उद्योग और व्यवसाय के साथ स्वास्थ्य पर भी ध्यान देने का आग्रह किया। आर्य ने कहा कि स्वस्थ जीवन के लिए नियमित योग, संयम और व्यसनमुक्त जीवनशैली को अपनाना चाहिए। तेजाजी महाराज के आदर्श अपनाने का आान भंवरलाल आर्य ने कहा कि सत्यवादी वीर तेजाजी महाराज के जीवन और आदर्शों से प्रेरणा लेकर समाज में सत्य, साहस, सेवा और सामाजिक एकता को मजबूत किया जाना चाहिए। उन्होंने समाजबंधुओं से आपसी प्रेम और सद्भाव के साथ रहने तथा सामाजिक सेवा कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाने का आान किया।

बैठक में आगामी 21 सितंबर को आयोजित होने वाले बलिदान दिवस समारोह की तैयारियों को लेकर भी चर्चा की गई। समाज के सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सहयोग का संकल्प व्यक्त किया। बैठक में चुन्नीलाल भांबू, अनिल मुंडण, मगाराम लोल, मदन गोदारा, भंवराराम मनमोडा, जगदीश धतरवाल, राजूराम बुगालिया, डालूराम भादु, मदनराम सांई, गोपाल बुगालिया, जालाराम कडोलिया, अर्जुनराम, जानी लालुसिंह सहित समाज के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। बैठक में सामाजिक एकता, स्वास्थ्य जागरूकता और संस्कारों को मजबूत करने के साथ वीर तेजाजी महाराज के आदर्शों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने पर जोर दिया गया।

जैन पाठशाला का वार्षिकोत्सव: संस्कार, संस्कृति और प्रतिभा का दिखा संगम

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 23 अगस्त 2026। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री जिन कुशल सूरी जैन धार्मिक पाठशाला का वार्षिकोत्सव श्रद्धा, उत्साह और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह पूज्य गुरुवर्या श्री प्रियश्रद्धांजना श्री जी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में ट्रस्ट के अध्यक्ष तेजराज मालानी ने पाठशाला के सभी अभ्यासकों को शुभकामनाएं दीं। महामंत्री कुशल राज गुलेच्छा ने विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों का स्वागत किया। ट्रस्ट के ललित डाकलिया ने पाठशाला की गतिविधियों और उपलब्धियों की जानकारी साझा की। 27 वर्षों से धार्मिक शिक्षा और संस्कारों का प्रयास

ललित डाकलिया ने बताया कि पाठशाला की शुरूआत करीब 27 वर्ष पूर्व साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. की प्रेरणा से हुई थी। उनके अनुसार वर्तमान में यहां 200 से अधिक विद्यार्थी धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। पाठशाला से जुड़े सात बच्चों ने अलग-अलग समय पर जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की और वर्तमान में साध्वी के रूप में देशभर में जिन शासन की सेवा कर रहे हैं।

समारोह का शुभारंभ साध्वी जी के मंगलाचरण से हुआ। इसके बाद पूर्व अध्यक्ष निर्भयलाल गुलेच्छा, बाबूभाई मेहता, शांतिलाल जैन, पवनी बाफना सहित ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने दीप प्रज्वलित किया।

सहयोगी परिवार और शिक्षकों का सम्मान

पाठशाला की गतिविधियों में पिछले कई वर्षों से सहयोग देने वाले श्रीमती ललिता देवी, पुखराज एवं राजेश कुमार शाह परिवार का दादावाड़ी ट्रस्ट की ओर से बहुमान एवं अभिनंदन किया गया। पाठशाला के प्रति समर्पित सेवाओं के लिए रोहित गुरुजी का भी सम्मान किया गया। पाठशाला की शिक्षिकाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनका अभिनंदन किया गया। शैक्षणिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले तथा विभिन्न स्तरों पर अव्वल रहने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

जस्टिस ऑफ कर्माह्न रहा समारोह का आकर्षण

समारोह का प्रमुख आकर्षण पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत ह्यजस्टिस ऑफ कर्माह्न नाटक रहा। बच्चों ने अभिनय के माध्यम से जैन दर्शन के कर्म सिद्धांत और उसके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। प्रस्तुति को उपस्थित दर्शकों ने सराहा।

इसके अलावा विद्यार्थियों ने विभिन्न नृत्य-नाटिकाओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दीं। बच्चों के आत्मविश्वास, प्रतिभा और मंचीय प्रस्तुति ने समारोह में उपस्थित लोगों का ध्यान आकर्षित किया।

अभिभावकों और समाजजनों ने पाठशाला की शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि धार्मिक शिक्षा के साथ संस्कार और संस्कृति का समन्वय बच्चों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कार्यक्रम के आयोजन में मनीषा पनानी, उर्मिला कोठारी और संगीता बागरेचा सहित ट्रस्ट के सदस्यों ने सहयोग किया। समारोह में दादावाड़ी ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष रनजीत ललवानी, सहमंत्री धर्मेन्द्र संकलेचा, मोतीलाल ललवानी तथा श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के महामंत्री राजेंद्र गुलेच्छा सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे। समारोह का समापन धार्मिक भावनाओं, उत्साह और सामाजिक सहभागिता के वातावरण में हुआ।

नागेंद्र के इस्तीफे पर BJP का मोर्चा, 24 अगस्त को विधानसौधा घेराव

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 23 अगस्त 2026। कर्नाटक में वाल्मीकि निगम से जुड़े कथित वित्तीय अनियमितता के मामले को लेकर सियासी घमासान फिर तेज हो गया है। विधानसभा में विपक्ष के नेता आर. अशोक ने रविवार को कहा कि भारतीय जनता पार्टी (इखढ) 24 अगस्त को मंत्री बी. नागेंद्र के इस्तीफे की मांग को लेकर विधानसौधा का घेराव करेगी। प्रदर्शन सुबह 9.30 बजे इंडिपेंडेंस पार्क से शुरू करने की घोषणा की गई है। नागेंद्र के इस्तीफे पर अड़ी इखढ मल्लेश्वरम स्थित भाजपा के प्रदेश कार्यालय जगन्नाथ भवन में मीडिया से बातचीत में अशोक ने कहा कि प्रदर्शन में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र समेत पार्टी के कई नेता और कार्यकर्ता शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि पार्टी सदन के भीतर और बाहर इस मुद्दे को उठाती रहेगी। वाल्मीकि निगम मामले को लेकर भाजपा और जेडी(एस) पहले भी विधानसभा में विरोध प्रदर्शन कर चुके हैं। 21 अगस्त को दोनों दलों के विधायकों ने विधानसौधा तक मार्च निकाला था और नागेंद्र को मंत्रिमंडल से हटाने की मांग की थी।

क्या है वाल्मीकि निगम मामला?

कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम में कथित धन के दुरुपयोग का मामला 2024 में सामने आया था। जांच एजेंसियों के अनुसार निगम के खाते में जमा करीब 187 करोड़ रुपये में से 89.63 करोड़ रुपये कथित तौर पर फर्जी चेक और आरटीजीएस लेनदेन के जरिए दूसरी जगह स्थानांतरित किए गए। जांच में लगभग 600 बैंक खातों के माध्यम से रकम को आगे भेजने का भी आरोप सामने आया है।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की जांच में भी निगम के धन को विभिन्न खातों के माध्यम से स्थानांतरित किए जाने और रकम के एक हिस्से के चुनावी तथा निजी खर्चों में इस्तेमाल किए जाने के आरोप सामने आए थे। हालांकि मामले में आरोपों और जांच एजेंसियों के निष्कर्षों को अंतिम न्यायिक निर्णय नहीं माना जा सकता।

उइककी चार्जशीट में नागेंद्र का नाम

जून 2026 में सीबीआई ने वाल्मीकि निगम से जुड़े मामले में बी. नागेंद्र सहित कई आरोपियों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया था। सीबीआई के अनुसार जांच में नागेंद्र की कथित भूमिका सामने आई है और उनके परिवार के सदस्यों के खातों से जुड़े वित्तीय लेनदेन की भी जांच की गई। इसी मामले में हालिया घटनाक्रम के तहत सीबीआई ने कर्नाटक के राज्यपाल से नागेंद्र के खिलाफ अभियोजन की अनुमति भी मांगी है। रिपोर्टों के अनुसार मामला करीब 90 करोड़ रुपये की कथित वित्तीय अनियमितता से संबंधित है।

अशोक ने सरकार पर साधा निशाना

आर. अशोक ने आरोप लगाया कि सरकार को अनुसूचित जनजातियों के कल्याण के लिए निर्धारित धन के इस्तेमाल को लेकर जवाब देना चाहिए। उन्होंने कांग्रेस नेताओं से संविधान, अनुसूचित जाति-जनजाति हितों और सार्वजनिक धन के प्रति जवाबदेही स्पष्ट करने की मांग की।

अशोक ने कहा कि भाजपा इस मुद्दे को केवल विधानसभा तक सीमित नहीं रखेगी। उन्होंने संकेत दिया कि जरूरत पड़ने पर पार्टी राजभवन का रुख भी करेगी।

वहीं, नागेंद्र पहले आरोपों से इनकार कर चुके हैं और कांग्रेस सरकार ने उनके इस्तीफे की भाजपा की मांग को स्वीकार नहीं किया है। सरकार और विपक्ष के बीच इस मुद्दे पर विधानसभा की कार्यवाही भी कई दिनों तक प्रभावित रही है।

आरोपों पर न्यायिक प्रक्रिया का इंतजार वाल्मीकि निगम प्रकरण में जांच एजेंसियों की कार्रवाई और आरोपपत्र के बाद राजनीतिक विवाद लगातार बढ़ रहा है। विपक्ष मंत्री के इस्तीफे और सरकार से जवाबदेही की मांग कर रहा है, जबकि मामले में अंतिम दोष सिद्धि न्यायिक प्रक्रिया के बाद ही तय होगी। कर्नाटक में आगामी विधानसभा कार्यवाही के दौरान यह मुद्दा एक बार फिर राजनीतिक टकराव का केंद्र बनने के आसार हैं।

तमिलनाडु में 7 सीटों पर उपचुनाव की आहट, विजय ने दिए संकेत

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

चेन्नई, 23 अगस्त 2026। तमिलनाडु में सात विधानसभा सीटों पर संभावित उपचुनाव को लेकर राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। टीवीके की ओर से चुनावी तैयारियों को धार देने की चर्चा के बीच पार्टी प्रमुख एवं मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय ने संकेत दिया है कि चुनाव प्रचार के दौरान पिछली सरकार से जुड़े कथित भ्रष्टाचार के मामलों की फाइलें सार्वजनिक की जा सकती हैं।

राज्य की 234 सदस्यीय विधानसभा में तिरुचि ईस्ट, पेरुंदुरई, मदुरंतकम, धारापुरम, अंबासमुद्रम, करूर और विरलिमलाई सीटें वर्तमान में रिक्त बताई जा रही हैं। इनमें से पांच सीटों पर चुनाव याचिकाएं लंबित होने के कारण उपचुनाव नहीं हो सके हैं।

24 अगस्त के बाद तस्वीर हो सकती है साफ

तिरुचि ईस्ट, करूर, विरलिमलाई, पेरुंदुरई और अंबासमुद्रम सीटों से जुड़े मामलों में मद्रास हाईकोर्ट की रोक 24 अगस्त को समाप्त होने की संभावना बताई जा रही है। इसके बाद चुनाव आयोग इन सीटों सहित सभी सात रिक्त विधानसभा क्षेत्रों में उपचुनाव की प्रक्रिया आगे बढ़ा सकता है।

हालांकि, उपचुनाव की तारीख और कार्यक्रम की आधिकारिक घोषणा चुनाव आयोग की ओर से किए जाने के बाद ही स्थिति स्पष्ट होगी।

सरकार के लिए महत्वपूर्ण होंगे उपचुनाव

टीवीके ने हालिया विधानसभा चुनाव में 107 सीटों पर जीत दर्ज की थी, जो 234 सदस्यीय सदन में बहुमत के लिए आवश्यक 118 सीटों से 11 कम है। सरकार को कांग्रेस के पांच विधायकों तथा लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिलनाडु, सीपीआई, सीपीआई(एम) और इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के समर्थन का उल्लेख किया गया है।

ऐसे में सातों रिक्त सीटों पर जीत टीवीके के संख्याबल को मजबूत कर सकती है। यदि पार्टी सभी सात सीटें जीतती है तो उसकी संख्या 114 तक पहुंच सकती है और बहुमत के आंकड़े से उसकी दूरी घटकर चार सीट रह जाएगी।

विजय ने ह्यफाइलोंह्न को लेकर दिया संकेत

19 अगस्त को विधानसभा सत्र के दौरान विपक्ष की ओर से सरकार के आरोपों के समर्थन में दस्तावेजी प्रमाण मांगे जाने पर मुख्यमंत्री विजय ने कहा कि सरकार के पास कई मामलों से संबंधित प्रमाण मौजूद हैं।

उन्होंने संकेत दिया कि संबंधित फाइलें उनके पास हैं और उन्हें सही समय पर सार्वजनिक किया जा सकता है। उनके इस बयान को संभावित उपचुनावों से जोड़कर देखा जा रहा है।

हालांकि, जिन कथित भ्रष्टाचार के मामलों का उल्लेख किया जा रहा है, उनकी प्रकृति और उनमें किसी व्यक्ति या पूर्व सरकार की जिम्मेदारी के संबंध में अंतिम निष्कर्ष जांच अथवा आधिकारिक दस्तावेज सामने आने के बाद ही निकाला जा सकेगा।

राजनीतिक समीकरण पर सबकी नजर

सात विधानसभा सीटों के उपचुनाव टीवीके सरकार के लिए राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं। सहयोगी दलों का समर्थन फिलहाल सरकार के लिए अहम है, लेकिन भविष्य में नीतिगत या जनहित से जुड़े मुद्दों पर मतभेद होने की स्थिति में राजनीतिक समीकरण बदल सकते हैं।

अब निगाहें मद्रास हाईकोर्ट के मामलों और उसके बाद चुनाव आयोग के संभावित फैसले पर टिकी हैं। उपचुनाव की आधिकारिक घोषणा के साथ ही तमिलनाडु में सियासी मुकाबला और तेज होने की संभावना है।

व्हाइटफील्ड में सावन महोत्सव, मातृशक्ति ने बिखेरा संस्कृति का रंग

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 23 अगस्त 2026। भारतीय राजपुताना सेवा संगठन की व्हाइटफील्ड मातृशक्ति की ओर से सावन महोत्सव का भव्य आयोजन उत्साह और उल्लास के साथ किया गया। अध्यक्ष श्रीमती रोहिणी सिंह एवं उनकी टीम के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में मातृशक्ति बहनों ने भाग लिया। आयोजन में धार्मिक आस्था के साथ भारतीय संस्कृति, संस्कार और सामाजिक एकता की झलक दिखाई दी।

माता रानी और भोले बाबा की पूजा से हुआ शुभारंभ

कार्यक्रम की शुरूआत सामूहिक रूप से माता रानी और भोले बाबा की पूजा-अर्चना से हुई। इसके बाद संगठन और मातृशक्ति के जयघोष के बीच उपस्थित महिलाओं का तिलक, आरती एवं पुष्पों से स्वागत किया गया। सावन महोत्सव के दौरान महिलाओं के लिए म्यूजिकल चेयर और कप नॉट टचिंग सहित विभिन्न मनोरंजक गतिविधियां आयोजित की गईं। मातृशक्ति बहनों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया और नृत्य के साथ सावन की खुशियां साझा कीं। पूरे आयोजन के दौरान उत्साह, आपसी प्रेम और सौहार्द का वातावरण बना रहा।

चूड़ी, बिंदी और मेहंदी का वितरण

आयोजन में मातृशक्ति बहनों को चूड़ी, बिंदी, मेहंदी और केले वितरित किए गए। विभिन्न गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली एवं भाग लेने वाली महिलाओं को उपहार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम ने महिलाओं को मनोरंजन के साथ एक-दूसरे से जुड़ने और सामाजिक सहभागिता बढ़ाने का अवसर भी प्रदान किया। मातृशक्ति संगठन की मजबूत आधारशिला : अनिल सिंह भारतीय राजपुताना सेवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल सिंह सिकरवार ने मातृशक्ति को सावन महोत्सव की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि मातृशक्ति संगठन की मजबूती की महत्वपूर्ण आधारशिला है। महिलाओं की एकजुटता, सक्रिय सहभागिता और संस्कारों के प्रति समर्पण समाज को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने आयोजन को सफल बनाने के लिए रोहिणी सिंह और व्हाइटफील्ड मातृशक्ति टीम को बधाई दी तथा कार्यक्रम में सहयोग करने वाले सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। सावन महोत्सव धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक परंपरा और महिला सहभागिता के सुंदर संगम के रूप में सम्पन्न हुआ।

कांवरियों की सेवा में उतरे ग्रामीण चिकित्सक, बांटी दवाएं और भोजन

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

मधुबनी, 23 अगस्त 2026। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाने के उद्देश्य से लंबे समय से काम कर रहे ग्रामीण चिकित्सकों ने जनसेवा की मिसाल पेश की। जन जीवक कल्याण संघ और भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ के बैनर तले रहिका चौक के निकट कांवरियों की सेवा के लिए शिविर लगाया गया। शिविर में श्रद्धालुओं को आवश्यक दवाइयों के साथ पानी, खीर, पूरी और अन्य खाद्य सामग्री वितरित की गई। कांवरियों के लिए चिकित्सा सहायता सेवा शिविर में संघ से जुड़े ग्रामीण चिकित्सकों और कांवरिया सेवा संघ के सदस्यों ने श्रद्धालुओं की आवश्यकताओं का जायजा लिया। चिकित्सकों ने स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को सुना और जरूरत के अनुसार

चिकित्सकीय परामर्श दिया। दवाइयों और भोजन-पानी की उपलब्धता से दूर-दराज से आने वाले कांवरियों को राहत मिली।

वर्ष 2005 से ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा

संस्था से जुड़े लोगों के अनुसार ग्रामीण चिकित्सक वर्ष 2005 से ग्रामीण क्षेत्रों में जरूरतमंद लोगों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के प्रयास में जुटे हैं। उनका उद्देश्य सीमित संसाधनों वाले परिवारों को स्थानीय स्तर पर प्राथमिक चिकित्सा संबंधी सहायता और स्वास्थ्य जागरूकता उपलब्ध कराना है। संघ के महासचिव डॉ. जगरनाथ राय ने कहा कि ग्रामीण चिकित्सक और स्वास्थ्यकर्मी लगातार गांवों में लोगों के बीच जाकर स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने का काम कर रहे हैं। उन्होंने चिकित्सा सेवा को मानवता और सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ते हुए जरूरतमंदों की सहायता को प्राथमिकता देने की बात कही।

ग्रामीणों ने सराहा सेवा कार्य

स्थानीय ग्रामीणों ने चिकित्सकों की इस पहल की सराहना की। उनका कहना है कि गांवों और आसपास के क्षेत्रों में समय पर चिकित्सकीय सलाह तथा प्राथमिक सहायता उपलब्ध होने से जरूरतमंद परिवारों को राहत मिलती है। ऐसे सेवा शिविर स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के साथ सामाजिक सहभागिता को भी प्रोत्साहित करते हैं।

शिविर में मेयर अरुण राय, एमएलसी घनश्याम ठाकुर, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रभांशु झा, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. रविंद्र ठाकुर, डॉ. विकास कुमार, डॉ. रागिनी कुमारी, डॉ. अजित कुमार, डॉ. पल्लवी कुमारी और ध्रुव झा सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। ग्रामीण चिकित्सकों की यह पहल चिकित्सा सेवा के साथ सामाजिक सरोकार और जनभागीदारी का उदाहरण बनी। ऐसे आयोजनों से जरूरतमंदों तक तत्काल सहायता पहुंचाने के साथ युवाओं और समाज के अन्य वर्गों को भी जनसेवा के लिए प्रेरित करने का संदेश मिलता है।

पंजाब में नशे का मुद्दा फिर गरमाया, AAP सरकार पर विपक्ष के गंभीर आरोप

भारतार्थ खबर संवाददाता अशोक कुमार सिंह **Bhaarataarth.com**

पंजाब' 23 अगस्त 2026। पंजाब में नशे की समस्या को लेकर सियासी बहस एक बार फिर तेज हो गई है। विपक्ष ने आम आदमी पार्टी (अअढ) की भगवंत मान सरकार पर नशे के खिलाफ कार्रवाई को लेकर सवाल उठाए हैं और आरोप लगाया है कि सरकार के दावों के बावजूद राज्य में युवाओं के बीच नशे की समस्या गंभीर बनी हुई है।

पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग ने हाल में आरोप लगाया कि अअढ सरकार के कार्यकाल में नशे की समस्या कई गुना बढ़ी है। हालांकि, यह विपक्ष का राजनीतिक दावा है और इसे

स्वतंत्र रूप से प्रमाणित तथ्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। सरकार का दावा– नशे के खिलाफ कार्रवाई तेज भगवंत मान सरकार का कहना है कि राज्य में नशे के नेटवर्क के खिलाफ बड़े स्तर पर कार्रवाई की जा रही है। सरकार के अनुसार मार्च 2025 से 1 अगस्त 2026 के बीच नशा तस्करी से जुड़े मामलों में 75,102 गिरफ्तारियां, 54,916 [illegible] और लगभग 3,472 किलोग्राम हेरोइन की बरामदगी हुई। सरकार का दावा है कि अभियान का उद्देश्य केवल नशे की आपूर्ति रोकना ही नहीं, बल्कि युवाओं को नशे से दूर कर उन्हें शिक्षा, रोजगार और खेल जैसी सकारात्मक गतिविधियों से जोड़ना भी है।

आंकड़ों की व्याख्या को लेकर अलग-अलग दावे

पंजाब में NDPS मामलों और गिरफ्तारियों में वृद्धि के आंकड़े सामने आए हैं। सरकार इन्हें नशे के खिलाफ बढ़ी हुई कार्रवाई का परिणाम बताती है, जबकि विपक्ष इन्हीं आंकड़ों के आधार पर सरकार की नशा नीति पर सवाल खड़े करता है।

इसलिए केवल FIR या गिरफ्तारियों की संख्या बढ़ने को राज्य में नशा बढ़ने का सीधा प्रमाण मानना उचित नहीं होगा। वास्तविक स्थिति समझने के लिए नशे की उपलब्धता, उपचार केंद्रों में पहुंचने वाले मरीजों, नशे से होने वाली मौतों और तस्करी के नेटवर्क पर कार्रवाई जैसे कई पहलुओं को साथ देखना जरूरी है।

जमीनी चुनौती अब भी बड़ी

हाल के दिनों में पंजाब के मालवा क्षेत्र से नशे से जुड़ी संदिग्ध मौतों की खबरों ने एक बार फिर चिंता बढ़ाई है। इन मामलों में मौत के वास्तविक कारणों की पुष्टि जांच के बाद ही की जा सकती है। इसके बावजूद ऐसी घटनाएं बताती हैं कि पंजाब में नशे की समस्या अभी समाप्त नहीं हुई है और सरकार के सामने बड़ी चुनौती बनी हुई है।

राजनीतिक आरोपों से आगे समाधान की जरूरत पंजाब में नशा अब मुद्दा अब केवल राजनीतिक बहस तक सीमित नहीं रह सकता। नशा रोकने के लिए तस्करी के नेटवर्क पर सख्त कार्रवाई के साथ-साथ युवाओं के लिए रोजगार, खेल, शिक्षा, पुनर्वास और मानसिक-सामाजिक सहायता की व्यवस्था मजबूत करना भी जरूरी है।

राहुल गांधी के मंच से नेहा राठौर का सियासी गीत, गरमाई चर्चा

भारतार्थ खबर **Bhaarataarth.com**

पुणे। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के एक कार्यक्रम में लोकगायिका नेहा सिंह राठौर की मौजूदगी और उनके राजनीतिक तेवर वाले लोकगीत ने सियासी हलकों में चर्चा तेज कर दी है। पुणे में आयोजित कार्यक्रम के दौरान नेहा सिंह राठौर ने मंच से गीत के माध्यम से मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था और हिंदू-मुस्लिम मुद्दे पर सवाल उठाए।

नेहा सिंह राठौर अपने लोकगीतों के जरिए सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर टिप्पणी करने के लिए जानी जाती हैं। कार्यक्रम में उन्होंने अपने गीत के माध्यम से राजनीतिक विमर्श में धर्म के इस्तेमाल पर सवाल उठाते हुए सरकार की नीतियों और व्यवस्था पर तीखी टिप्पणी की।

गीत के जरिए हिंदू-मुस्लिम राजनीति पर निशाना

मंच से प्रस्तुति के दौरान नेहा सिंह राठौर ने कहा कि हिंदू-मुसलमान के नाम पर राजनीति करने से देश के मूल मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। उन्होंने अपने गीत में सत्ता और व्यवस्था पर कटाक्ष करते हुए हिंदुस्तान को किसी एक वर्ग या व्यक्ति की संपत्ति नहीं बताया।

उनकी प्रस्तुति के दौरान मौजूद लोगों ने प्रतिक्रिया दी और गीत का वीडियो सोशल मीडिया पर भी चर्चा में आने लगा।

ट्रेन में चढ़ा पूरा ऑटो, महाराष्ट्र का VIDEO वायरल

भारतार्थ खबर **Bhaarataarth.com**

महाराष्ट्र। महाराष्ट्र के एक रेलवे स्टेशन का वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना हुआ है। वायरल वीडियो में एक पूरा ऑटो-रिक्शा ट्रेन के लगेज कोच में चढ़ाते हुए दिखाई दे रहा है। स्टेशन पर मौजूद यात्रियों के लिए यह नजारा इतना असामान्य था कि कई लोग अपनी नजरें हटाए बिना पूरी प्रक्रिया देखते रहे।

वीडियो में प्लेटफॉर्म पर खड़ी ट्रेन के लगेज कोच का दरवाजा खुला दिखाई देता है। कई लोग मिलकर ऑटो-रिक्शा को सावधानीपूर्वक धक्का देते हुए कोच के अंदर पहुंचाते नजर आते हैं। कुछ ही देर में ऑटो पूरी तरह ट्रेन के अंदर चला जाता है।

सोशल मीडिया पर लोगों ने लिए मजे

ऑटो-रिक्शा को ट्रेन में चढ़ाते हुए वीडियो सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर लोगों की अलग-अलग प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं। कई यूजर्स ने इस अनोखे दृश्य पर मजेदार टिप्पणियां कीं, जबकि कुछ लोगों ने हैरानी जताई कि आखिर ऑटो को ट्रेन में ले जाने की जरूरत क्यों पड़ी। कुछ लोगों ने मजाकिया अंदाज में लिखा कि अब ट्रेन में यात्रियों के साथ ऑटो-रिक्शा भी सफर करने लगा है। वहीं, कई यूजर्स ने इसे भारतीय रेलवे से जुड़े उन असामान्य दृश्यों में शामिल बताया, जो कैमरे में कैद होने के बाद तेजी से इंटरनेट पर फैल जाते हैं।

ऑटो को ट्रेन से क्यों भेजा गया, स्पष्ट नहीं

वायरल वीडियो में ऑटो-रिक्शा को ट्रेन में चढ़ाने का दृश्य तो दिखाई देता है, लेकिन इसे किस स्टेशन से किस स्थान तक ले जाया जा रहा था और इसके पीछे क्या कारण था, इसकी स्पष्ट जानकारी वीडियो में उपलब्ध नहीं है। इसलिए ऑटो को ट्रेन में ले जाने की वजह को लेकर किसी तरह का निश्चित दावा करना उचित नहीं होगा। सोशल मीडिया पर किए जा रहे अनुमान की स्वतंत्र रूप से पुष्टि भी नहीं हुई है।

लगेज और पार्सल कोच में भेजे जा सकते हैं वाहन

रेलवे के पार्सल और लगेज परिवहन के माध्यम से निर्धारित नियमों और प्रक्रिया के तहत विभिन्न प्रकार के सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजा जा सकता है। कुछ परिस्थितियों में वाहन भी रेल परिवहन के जरिए भेजे जा सकते हैं। हालांकि, आम यात्रियों के लिए ट्रेन के लगेज कोच में पूरा ऑटो-रिक्शा चढ़ते देखना निश्चित रूप से असामान्य दृश्य है। यही वजह है कि महाराष्ट्र के इस स्टेशन से जुड़ा वीडियो सोशल मीडिया पर लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहा है।

भागलपुर को मिलेगी नई रफ्तार, 995 करोड़ का फोरलेन पुल 2028 तक तैयार होने का लक्ष्य

भारतार्थ खबर **Bhaarataarth.com**

भागलपुर, 23 अगस्त 2026। बिहार में सड़क और पुलों के जरिए संपर्क व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में भागलपुर में एक महत्वपूर्ण परियोजना पर काम चल रहा है। विक्रमशिला सेतु के समानांतर करीब 995 करोड़ रुपये की लागत से 4.445 किलोमीटर लंबे फोरलेन पुल का निर्माण कराया जा रहा है। परियोजना को वर्ष 2028 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

40 पिलरों पर खड़ा होगा फोरलेन पुल

प्रस्तावित फोरलेन पुल को मजबूती देने के लिए कुल 40 पिलर बनाए जा रहे हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार बरारी की ओर स्थित यार्ड से 23 और नवगछिया की ओर से 17 पिलरों का निर्माण किया जा रहा है। पिलरों के बीच करीब 100 से 110 मीटर की दूरी रखी जाएगी।

पुल का निर्माण एसपी सिंगला की ओर से सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की निगरानी में कराया जा रहा है। नदी के बीच पिलर निर्माण का काम जलस्तर और सुरक्षा संबंधी परिस्थितियों का आकलन करने के बाद आगे बढ़ाया जाएगा।

गणेश प्रतिमा गिरी, दो की मौत; पांच घायल

भारतार्थ खबर **Bhaarataarth.com**

मुंबई। गणेशोत्सव की तैयारियों के बीच मुंबई के भुलेश्वर इलाके में शनिवार रात गणेश आगमन समारोह के दौरान बड़ा हादसा हो गया। "भुलेश्वर चा राजा" की विशाल गणेश प्रतिमा अचानक गिरने से दो लोगों की मौत हो गई, जबकि पांच लोग घायल हो गए। घायलों में पांच और सात वर्ष की दो बच्चियां भी शामिल हैं। हादसा रात करीब 10 बजे बलराम मर्चेंट रोड पर कबूतरखाना के पास जय अंबे चौक में हुआ। जानकारी के अनुसार, गणेश प्रतिमा को आगमन समारोह के तहत पंडाल की ओर ले जाया जा रहा था। इसी दौरान प्रतिमा अचानक गिर गई और उसके आसपास मौजूद कुछ लोग इसकी चपेट में आ गए। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। दो लोगों ने इलाज के दौरान तोड़ा दम हादसे में संकेत नेवशे (33)

और बृजेश हेमंत जोशी (30) गंभीर रूप से घायल हुए थे। दोनों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना में वैभव घेनंद (38), पवन चौरसिया (25), लावण्या गनेर (5), दिव्या गनेर (7) और कुणाल काशिद (26) घायल हुए हैं। अधिकारियों के अनुसार सभी घायलों का अस्पताल में उपचार चल रहा है और उनकी हालत फिलहाल स्थिर बताई गई है। फायर ब्रिगेड समेत कई टीमें मौके पर पहुंचीं हादसे की सूचना मिलते ही मुंबई फायर ब्रिगेड, पुलिस, ट्रैफिक पुलिस, एंबुलेंस और नगर निगम की टीमें घटनास्थल पर पहुंचीं। राहत एवं बचाव अभियान चलाकर घायलों को बाहर निकाला गया और अस्पताल पहुंचाया गया। घटना के बाद पुलिस और प्रशासन की टीमों ने मौके की स्थिति का जायजा लिया। प्रतिमा गिरने के कारणों की जांच की जा रही है। अधिकारियों की ओर से अभी हादसे की वजह को लेकर कोई अंतिम निष्कर्ष सामने नहीं आया है। आगमन जुलूस में जुटी थी बड़ी भीड़ मुंबई में गणेशोत्सव के दौरान सार्वजनिक गणेश मंडलों की ओर से बड़े पैमाने पर प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं। प्रतिमा को पंडाल तक पहुंचाने के लिए गणेश आगमन जुलूस निकाले जाते हैं, जिनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल होते हैं। भुलेश्वर में भी शनिवार रात ढोल-ताशों के साथ गणेश आगमन समारोह चल रहा था। इसी दौरान विशाल प्रतिमा गिरने से वहां मौजूद लोगों में चीख-पुकार मच गई। 2,729 गणेश पंडालों को मिली मंजूरी गणेशोत्सव को लेकर मुंबई में व्यापक तैयारियां चल रही हैं।

हिमाचल में मानसून का कहर, 149 सड़कें बंद

भारतार्थ खबर **Bhaarataarth.com**

शिमला, 23 अगस्त 2026। हिमाचल प्रदेश में मानसून की भारी बारिश से जनजीवन लगातार प्रभावित है। राज्य आपातकालीन संचालन केंद्र (SEOC) की 23 अगस्त सुबह 10 बजे की रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश में 149 सड़कें बंद हैं, 60 बिजली वितरण ट्रांसफार्मर (DTR) बाधित हैं और 35 पेयजल योजनाएं प्रभावित हुई हैं। मानसून के दौरान 22 अगस्त तक राज्य में 224 लोगों की मौत दर्ज की जा चुकी है। मंडी में सबसे अधिक सड़कें बंद सड़क बंद होने से सबसे अधिक प्रभावित मंडी जिला है, जहां 86 सड़कें अवरुद्ध हैं। कुल्लू में 31, शिमला में 10, चंबा और कांगड़ा में आठ-आठ, ऊना में चार तथा बिलासपुर और लाहौल-स्पीति में एक-एक सड़क बंद है। किन्नौर, सिरमौर और सोलन में फिलहाल सड़क बंद होने की सूचना नहीं है। बिजली आपूर्ति पर भी बारिश का असर पड़ा है। मंडी में 25 और चंबा में 20 उळ्फबाधित हैं। शिमला में 11, कांगड़ा में

तीन और कुल्लू में एक उळ्फप्रभावित है। पेयजल योजनाओं में हमीरपुर की 30, शिमला की चार और कांगड़ा की एक योजना प्रभावित बताई गई है। मानसून में 224 लोगों की मौत की 30 जून से 22 अगस्त तक की संचयी रिपोर्ट के मुताबिक मानसून सीजन में 224 लोगों की जान जा चुकी है, जबकि 330 लोग घायल हुए हैं और एक व्यक्ति लापता है। इनमें 91 मौतें आपदा से जुड़ी घटनाओं और 133 मौतें सड़क दुर्घटनाओं में हुई हैं। आपदा से संबंधित मौतों में भूस्खलन, बाढ़, डूबने, पत्थर गिरने सहित अन्य घटनाएं शामिल हैं। बारिश के दौरान सड़क दुर्घटनाएं भी बड़ी चिंता बनी हुई हैं।

1,121 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान

राज्य में मानसून से अब तक 1,12,129.57 लाख रुपये यानी करीब 1,121.30 करोड़ रुपये का नुकसान दर्ज किया गया है। बारिश और प्राकृतिक आपदाओं से निजी एवं सार्वजनिक संपत्तियों के अलावा मकानों, दुकानों, गौशालाओं और अन्य ढांचों को नुकसान पहुंचा है। रिपोर्ट में 441 पशुओं की मौत भी दर्ज की गई है।

बारिश बनी आफत, गोहाना की सड़कें जलमग्न

भारतार्थ खबर **Bhaarataarth.com**

गोहाना (सोनीपत), 23 अगस्त 2026। रविवार तड़के हुई तेज बारिश ने गोहाना शहर की जल निकासी व्यवस्था की तस्वीर सामने ला दी। करीब दो घंटे तक हुई वर्षा के बाद शहर की कई प्रमुख सड़कों और निचले इलाकों में पानी भर गया। कई स्थानों पर सड़कें तालाब जैसी नजर आईं, जिससे वाहन चालकों और पैदल राहगीरों को काफी परेशानी हुई। बारिश की शुरूआत सुबह करीब 4 बजे हुई। दिन निकलने के बाद वर्षा की तीव्रता बढ़ गई। लगातार बारिश के कारण शहर के निचले हिस्सों के अलावा प्रमुख मार्गों पर भी

जलभराव हो गया। पानी इतना अधिक था कि पैदल चलना मुश्किल हो गया, जबकि दोपहिया वाहन चालकों को भी सावधानी से रास्ता तय करना पड़ा। जलभराव में फंसे वाहन शहर के कुछ हिस्सों में सड़कों पर जमा पानी के कारण वाहन बंद हो गए। लोगों को कई वाहनों को धक्का देकर पानी से बाहर निकालना पड़ा। स्थानीय लोगों का कहना है कि तेज बारिश के बाद शहर में जलभराव की समस्या बार-बार सामने आती है।

बारिश के बाद सड़कें जलमग्न होने से एक बार फिर जल निकासी व्यवस्था को लेकर किए जाने वाले दावों पर सवाल उठे। हालांकि, जलभराव के कारणों और निकासी व्यवस्था की स्थिति को लेकर संबंधित प्रशासन की ओर से कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया उपलब्ध नहीं है।

श्रीराम के वनवास ने भावुक किए श्रद्धालु

भारतार्थ खबर **Bhaarataarth.com**

बेंगलूरु, 23 अगस्त 2026। श्री मातेश्वरी भक्त मंडल की ओर से होसूर भण्डे स्थित श्री कृष्णा गौशाला परिसर में आयोजित नौ दिवसीय श्रीराम कथा के पांचवें दिन रविवार को प्रभु श्रीराम के वनवास प्रस्थान का मार्मिक प्रसंग सुनाया गया। कथा वाचक संत किशोरचन्द रामायणी ने संगीतमय शैली में भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण के वन गमन का भावपूर्ण वर्णन किया। प्रसंग के दौरान पंडाल में मौजूद श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे।

संत किशोरचन्द रामायणी ने कहा कि श्रीराम का वनवास त्याग, कर्तव्य, आज्ञापालन और मयार्दा का आदर्श प्रस्तुत करता है। प्रभु श्रीराम ने पिता राजा दशरथ के वचन की मयार्दा बनाए रखने के लिए राजपाट का त्याग कर वनवास स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि श्रीराम का जीवन आज भी माता-पिता के सम्मान, परिवार के प्रति दायित्व और कठिन परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

कथा में श्रीराम और केवट संवाद तथा माता शबरी द्वारा भगवान को प्रेमपूर्वक बेर अर्पित करने का प्रसंग भी सुनाया गया। संत ने कहा कि भगवान बाहरी आडंबर के बजाय भक्त के सच्चे प्रेम और निष्कपट भाव को स्वीकार करते हैं। शबरी की भक्ति के माध्यम से प्रभु श्रीराम ने समाज को प्रेम, समानता और समर्पण का संदेश दिया।

कथा के दौरान प्रस्तुत भजनों से वातावरण भक्तिमय हो गया और श्रद्धालु भाव-विभोर होकर झूम उठे। कार्यक्रम के अंत में आरती हुई और श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया। आरती एवं प्रसाद वितरण के लाभार्थी चेलाराम, दानाराम, धनाराम, राजुराम एवं राकेश चोयल परिवार, कोयम्बटूर रहे।

निःशुल्क आई कैंप में 76 लोगों की जांच

भारतार्थ खबर **Bhaarataarth.com**

चेन्नई, 23 अगस्त 2026। महावीर इंटरनेशनल चेन्नई गोल्ड सेंटर की ओर से रोटरी क्लब ऑफ चेन्नई नोबल हार्ट के सौजन्य तथा श्री रामचंद्रा हॉस्पिटल, पोरूर के सहयोग से रविवार को पल्लीकरणै स्थित मदर मैट्रिक हायर सेकेंडरी स्कूल में नौवां निःशुल्क नेत्र जांच शिविर आयोजित किया गया।

सुबह प्रार्थना के बाद आयोजित शिविर में चिकित्सकीय टीम ने कुल 76 लोगों की नेत्र जांच की। इसके साथ ही 49 लोगों की निःशुल्क रक्तचाप और रक्त शर्करा की जांच की गई। जांच के बाद 43 जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क चश्मे वितरित किए गए।

शिविर के दौरान जांच में 11 मरीजों में मोतियाबिंद की समस्या पाई गई। इन मरीजों को आगे उपचार एवं मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए श्री रामचंद्रा हॉस्पिटल, पोरूर भेजा गया।

शिविर में जरूरतमंद मरीजों के लिए गले और कमर के पट्टे, घुटनों के मोजे, मोनीसन बाम, एड़ी के सॉक्स, स्प्रे, जेल तथा रिस्ट बैंड जैसी उपयोगी सामग्री भी किफायती दरों पर उपलब्ध कराई गई। आयोजन को सफल बनाने में चेयरमैन महेन्द्र-गुणवंती पगारिया, वाइस चेयरमैन प्रवीण-नीता कुम्भट, सचिव नरेन्द्र खांटेड, कोषाध्यक्ष बसन्त बरड़िया सहित उम्मेद बाफना, दीपक पगारिया, उत्तमजी कोठारी, बिरमाराम और नारायणलाल सीरवी का विशेष सहयोग रहा।

सिद्धार्थनगर में डंपर पलटा, चालक की मौत

भारतार्थ खबर **Bhaarataarth.com**

सिद्धार्थनगर, 23 अगस्त 2026। सनई-पकड़ी मार्ग पर रविवार तड़के सड़क निर्माण के लिए गिट्टी लेकर जा रहा डंपर अनियंत्रित होकर पलट गया। हादसे में डंपर चालक 48 वर्षीय हरिशंकर की मौके पर ही मौत हो गई। रात के समय सड़क पर आवाजाही कम होने के कारण दुर्घटना की जानकारी सुबह हो सकी।

हरिशंकर पुत्र महाबली उस्का बाजार नगर पंचायत के सरदार पटेल नगर वार्ड के निवासी थे। वह क्षेत्र में चल रहे सड़क निर्माण कार्य में डंपर चालक के रूप में कार्य करते थे। शनिवार रात वह डंपर लेकर उस्का बाजार की ओर जा रहे थे। बताया गया कि रविवार तड़के करीब तीन बजे सनई से लगभग एक किलोमीटर दूर सनई-पकड़ी मार्ग पर डंपर अचानक अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसा इतना गंभीर था कि हरिशंकर की घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

आधार कार्ड से हुई चालक की पहचान

रात में मार्ग पर आवाजाही कम होने के कारण हादसे की तत्काल जानकारी नहीं मिल सकी। सुबह सूचना मिलने पर सिद्धार्थनगर थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। पुलिस ने डंपर के आसपास जांच की और चालक की पहचान के प्रयास किए। तलाशी के दौरान हरिशंकर की जेब से आधार कार्ड मिला, जिसके आधार पर उनकी पहचान हुई। इसके बाद पुलिस ने परिजनों को दुर्घटना की सूचना दी।

पुलिस ने शुरू की जांच

थानाध्यक्ष मिथलेश राय के अनुसार, पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। हादसा किन परिस्थितियों में हुआ, इसकी जांच की जा रही है। हरिशंकर की मौत की सूचना मिलते ही सरदार पटेल नगर वार्ड स्थित उनके घर में मातम छा गया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल रहा। पुलिस दुर्घटना के कारणों और घटनाक्रम की जांच में जुटी है।

कुत्ते का भेष बनाकर ADM के पास पहुंचा फरियादी

भारतार्थ खबर **Bhaarataarth.com**

खंडवा, 23 अगस्त 2026। मध्य प्रदेश के खंडवा में आवारा कुत्तों की समस्या को लेकर विरोध जताने का एक अनोखा मामला सामने आया है। नगर पालिका में विपक्ष के नेता दीपक "मुल्लू" राठौड़ 18 अगस्त को आयोजित जनसुनवाई में एक युवक को कुत्ते का भेष और मास्क पहनाकर कलेक्टर कार्यालय लेकर पहुंचे। इस घटना का वीडियो अब सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रहा है।

बताया गया कि राठौड़ ने शहर में बढ़ती आवारा कुत्तों की समस्या और कथित तौर पर कार्रवाई नहीं होने के मुद्दे को प्रशासन के सामने अलग तरीके से रखने के लिए यह तरीका अपनाया। कुत्ते के रूप में पहुंचे युवक को अधिकारियों के समक्ष ले जाकर आवारा कुत्तों की समस्या के समाधान की मांग की गई।

नसबंदी अभियान पर उठाए सवाल

राठौड़ का आरोप है कि आवारा कुत्तों की नसबंदी के लिए पिछले चार वर्षों में करीब 40 लाख रुपये खर्च किए गए, इसके बावजूद समस्या कम होने के बजाय बढ़ती गई। उन्होंने नसबंदी अभियान की प्रभावशीलता और खर्च की जांच की मांग की।

उनका दावा है कि इसी अवधि में शहर में कुत्तों के काटने की 13,225 घटनाएं सामने आईं। हालांकि, इन आंकड़ों और खर्च से जुड़े दावों की स्वतंत्र पुष्टि इस रिपोर्ट में उपलब्ध नहीं है।

जनसुनवाई में अनोखा विरोध

जनसुनवाई के दौरान राठौड़ ने नसबंदी अभियान पर सवाल उठाते हुए व्यंग्यात्मक उदाहरण भी दिया। उन्होंने दावा किया कि जिस कुत्ते की कथित रूप से नसबंदी की गई थी, उसके बाद भी उसने छह पिल्लों को जन्म दिया। इसके जरिए उन्होंने अभियान में कथित अनियमितताओं की जांच की मांग की। राठौड़ ने प्रशासन से मामले की जांच कराने और यदि अनियमितता सामने आती है तो जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। पुलिस ने बाहर रोकने की कोशिश की बताया गया कि कुत्ते का भेष धारण किए युवक को शुरूआत में पुलिसकर्मियों ने कलेक्टर कार्यालय के सभागार के बाहर रोकने का प्रयास किया। बाद में अधिकारियों के हस्तक्षेप के बाद उसे जनसुनवाई में जाने की अनुमति दी गई।

मौके पर मौजूद लोगों के बीच युवक का हुलिया चर्चा का विषय बना रहा। हालांकि, प्रशासनिक अधिकारियों ने आवारा कुत्तों से जुड़ी शिकायत को सुना। मामले में प्रशासन की ओर से आगे क्या कार्रवाई की जाती है, यह स्पष्ट नहीं हुआ है।

Printed Published & Owner by Dhanna Ram Choudhary And Printed at MNS Printers Pvt. Ltd., No.345/4, Bhattarahalli, Old Madras Road, Bengaluru Karnataka-560049. And Published at "Maruthi"Plaza"", No. 10/1, 1st Cross Road, 3rd Floor , Oil Mill Road, Arvind Nagar , Maruthi Seva Nagar Post, Kammanahalli, Bengaluru Urban, Karnataka -560033, Editor Dhanna Ram Choudhary , For Editorial 91641 17755, Advertisement 88676 89130 , RNI No. KNHIN/2026/A5540. E-Mail: news@bhaarataarth.com, Website: bhaarataarth.com, Established: 2026